फरवरी, 2022

उजाला

साक्षरता कार्यक्रम को समर्पित विचार-समाचार पत्रिका

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड
साक्षरता निकेतन, लखनऊ-226023

VISIT…

उजाला

वर्ष-67, अंक : 02
फरवरी, 2022

रवीन्द्र सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)
अध्यक्ष, इण्डिया लिटरेसी बोर्ड
साक्षरता निकेतन, लखनऊ।

सन्ध्या तिवारी,
आई.ए.एस. (से.नि.)
निदेशक, इण्डिया लिटरेसी बोर्ड
साक्षरता निकेतन, लखनऊ।

सम्पादक मण्डल

अध्यक्ष : प्रो0 जे0 वी0 वैशम्पायन
प्रधान सम्पादक : सन्ध्या तिवारी
मुख्य सम्पादक : अशोक गांगुली
सम्पादक : लायक राम मानव
सह सम्पादक : सौरभ खरे
आर0 सी0 यादव
हेमा सिंह
प्रबन्ध सम्पादक : सुधाकर मान सिंह

कम्पोजिंग एवं डिजाइनिंग
गुड्डू प्रसाद

सम्पादकीय सम्पर्क
सम्पादक, उजाला
साक्षरता निकेतन, पोस्ट-मानस नगर,
कानपुर रोड, लखनऊ-226023
दूरभाष : (0522) 2470268
ई-मेल : ujalamasik1957@gmail.com

अध्यक्ष की कलम से		01
सम्पादकीय		02
छत्रपति शिवाजी महाराज	अनुपम कुमार शुक्ल	03
आमदनी	संदीप पांडे	08
रसभरी मीठी जलेबी	पूनम पाण्डेय	11
इस माह के व्रत-त्यौहार	डॉ० शोभा अग्रवाल चिलबिल	13
बसंत के दोहे	वसीम अहमद नगरामी	15
लौट के बुद्धू घर को आए	डॉ० मोहम्मद अरशद खान	16
सर्दी के मौसम में मोमो	शिखर चन्द जैन	20
डॉक्टर हावर्ड केली	डॉ० मोहन सिंह क्षत्रिय	22
ओमीक्रॉन है आया	उदय मेघवाल 'उदय'	24
माली	डॉ० रंजना जायसवाल	25
भोजन नहीं करें बरबाद	गौरी शंकर वैश्य विनम्र	26
राज्य संसाधन केन्द्र, उ०प्र०		27
गणतंत्र दिवस समारोह		30
फूल रही है सरसों पीली	राम नरेश उज्ज्वल	31
बेटी की विदाई	डॉ० पुष्पलता	32
बथुआ के अद्भुत गुण	प्राची राय	36
मन्नू का मन	मीरा जैन	38
आने लगा बसन्त	गोविन्द भारद्वाज	39
फटी एड़ियाँ	सुरेश सौरभ	40
बनाएँ शकाहारी आमलेट	शताब्दी गरिमा	41
एक नदी बहती थी	डॉ० राजीव गुप्ता	42

बाल-साहित्य

फूलों वाला मोहल्ला	गिरीश पंकज	43
मनमोहक ऋतु	डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल'	46
हमारा प्यारा रेडियो	डॉ० अलका जैन 'आराधना'	47
आँवला बहुत ही गुणकारी	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	49
सही राह	अलका प्रमोद	50
आया बसंत	डॉ० रोहिताश्व अस्थाना	52
सुरजा भैंसे का अहम	दिनेश विजयवर्गीय	53
दो बिल्लियाँ	बद्री प्रसाद वर्मा अनजान	55
तितली	राजकुमार जैन राजन	56
ठण्ड का असर	डॉ० दिनेश पाठक 'शशि'	कवर-3
सूरज दादा	सुमन पाठक	कवर-3
सपनों की बारिश	डॉ० फहीम अहमद	कवर-4
जाड़े में बरसात	चक्रधर शुक्ल	कवर-4

आप ई-पत्रिका के रूप में 'उजाला' के नवीनतम 3 अंकों की पी.डी.एफ. हर महीने इण्डिया लिटरेसी बोर्ड की वेबसाइट- **www.indialiteracyboard.org.** पर पढ़ सकते हैं।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

अध्यक्ष की कलम से ...

□ **रवीन्द्र सिंह,** आई.ए.एस. (से.नि.)
अध्यक्ष, इण्डिया लिटरेसी बोर्ड।

बसन्त की आहट के साथ उजाला का फरवरी अंक आपके समक्ष है। बसन्त के आते ही सर्दी से राहत मिल जाती है। न अधिक जाड़ा, न अधिक गर्मी। एक ऐसा मौसम, जो सभी को भाता है। इसीलिए तो इसे ऋतुराज कहा जाता है। बसंत का मौसम सुन्दरता, नवीनता, प्रसन्नता, ऊर्जा, जीवंतता तथा समरसता का प्रतीक है। बसन्त पंचमी से ही लोक जीवन में होली की तैयारियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं।

फरवरी, 2021 से उजाला का प्रारम्भ ई-पत्रिका के रूप में हुआ था। इस एक वर्ष में हमें आपका भरपूर सहयोग मिला है। इसे और बेहतर बनाने के लिए हम सदैव प्रयासरत हैं। इसके लिए एक सम्पादक मण्डल का गठन किया गया है। आगामी अंकों में इसके सुपरिणाम भी दिखाई देंगे। अब उजाला पहले से अधिक बेहतर, उपयोगी एवं नए रंग-रूप में आपके समक्ष होगा।

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड की परिचय श्रृंखला के क्रम में इस बार राज्य संसाधन केन्द्र, उ0प्र0 के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही है। सन् 1978-79 में जब भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया था, तभी प्रदेश स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग के लिए राज्य संसाधन केन्द्रों की स्थापना गई थी। उत्तर प्रदेश में राज्य संसाधन केन्द्र संचालित करने का दायित्त्व इण्डिया लिटरेसी बोर्ड को दिया गया था। हमने राज्य संसाधन केन्द्र के रूप में पाठ्य सामग्री निर्माण, प्रशिक्षण तथा शोध एवं मूल्यांकन के क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों से मिसाल कायम की है।

इस नए अंक के साथ आप सभी को बसंत पंचमी की हार्दिक बधाई एवं मंगल कामनाएँ !

रवीन्द्र सिंह
अध्यक्ष

संपादकीय

फरवरी आते ही मौसम का मिजाज तेजी से बदलने लगता है। धूप में गरमाहट बढ़ जाती है और कँपकँपाती ठण्ड से राहत मिलती है। पतझड़ के बाद प्रकृति अपने नए रंग-रूप में सजकर हमारे सामने आती है। पतझड़ और बसंत दुख व सुख के प्रतीक हैं, या यों कहें कि जीवन रूपी सिक्के के दो पहलू हैं। जैसे पतझड़ के बाद बसंत अवश्य आता है, वैसे ही दुख के बाद सुख का आना भी निश्चित है। दुख और सुख कभी स्थाई नहीं होते। यही जीवन का परम सत्य है। इसलिए न तो दुख में निराश होना है, न सुख में इतराना है।

बसंत का मौसम उल्लास एवं मस्ती भरा तो होता है, परन्तु इसमें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहने की भी आवश्यकता है। ठण्डक कम हो जाने पर प्रायः लोग पहनने-ओढ़ने के प्रति लापरवाह हो जाते हैं। यही लापरवाही कभी-कभी हमें बीमार बना देती है। यह उतार-चढ़ाव का मौसम है। अक्सर मौसम का मिजाज बिगड़ने से अचानक ठंड बढ़ जाती है। अतः ऐसी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना जरूरी है, ताकि स्वास्थ्य प्रभावित न हो।

पिछले दो वर्षों से कोविड-19 ने पूरे विश्व को त्रस्त कर रखा है। इस बार यह ओमीक्रॉन के रूप में हमें पीड़ित कर रहा है। यद्यपि ओमीक्रॉन वैरिएंट अपेक्षाकृत कम घातक है, फिर भी प्रसार के मामले में अधिक तीव्र है। पिछले वर्ष दूसरी लहर में हममें से बहुतों ने अपने सगे-सम्बन्धियों को खोया है। अतः सावधानी जरूरी है। हमें इस महामारी से बचाव के लिए हर सम्भव उपाय करने हैं। थोड़ी भी लापरवाही भारी पड़ सकती है। कोविड-19 से बचाव के लिए सशक्त ढाल के रूप में अब हमारे साथ वैक्सीन का सुरक्षा कवच भी है। इसका लाभ अवश्य उठाएँ।

आप सपरिवार सुरक्षित रहें, स्वस्थ व प्रसन्न रहें, इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ आप सभी को बसंत पंचमी की हार्दिक बधाई एवं मंगल कामनाएँ !

सन्ध्या तिवारी
प्रधान सम्पादक

महाराजाधिराज छत्रपति शिवाजी महाराज

□ अनुपम कुमार शुक्ल

पेट दर्द इतना तेज था कि कोई दवा काम नहीं कर रही थी। किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तभी कुछ शिष्यों ने गुरु रामदास के पास जाकर पूछा– "गुरुदेव, कोई तो उपाय होगा, जिससे यह दर्द शांत हो सके।"

समर्थ गुरु रामदास बोले– "हाँ है, अगर तुममें से कोई सिंहनी का दूध ले आए, तो यह दर्द शान्त हो जाएगा।"

गुरु की यह वाणी सुनकर वहाँ सन्नाटा छा गया। सिंहनी मतलब शेरनी। अर्थात् एक हिंसक पशु। जो जाएगा, वह उसका भोजन बन जाएगा। तभी सन्नाटे को चीरते हुए एक आवाज गूँजी– "मैं लाऊँगा सिंहनी का दूध।" यह सुनकर सभी शिष्य हक्के-बक्के रह गए। बालक शिव गुरु के पास आकर बोला– "गुरुदेव, मुझे आज्ञा दें, जिससे मैं शीघ्र सिंहनी का दूध ला सकूँ आपके लिए।"

समर्थ गुरु रामदास बोले– "एक बार फिर सोच लो शिवा। तुम्हारी जान भी जा सकती है।"

बालक शिवा बोला– "गुरु कृपा से सब सम्भव है। आपके प्राणों की रक्षा के लिए मेरी जान भी चली जाए, तो उसे गुरु दक्षिणा में स्वीकार कर लीजिएगा।"

यह कहकर बालक शिवा निकल गया जंगल की ओर सिंहनी को ढूँढ़ते हुए। भाग्य साहसियों का ही साथ देता है। आखिर बालक शिवा ने ढूँढ़ ही लिया सिंहनी को अपने छोटे शावकों के साथ। बालक शिवा भी हाथ जोड़कर पहुँच गया सिंहनी के पास। जैसे वह भी उसका ही बालक हो। पास पहुँच कर बोला– "माँ, जैसे यह छोटे शावक आपके बच्चे हैं। वैसे ही मैं भी आपका बालक हूँ। मेरे गुरुदेव तीव्र पेट दर्द से पीड़ित हैं। आपके दूध से ही वह स्वस्थ हो सकते हैं। मुझे भी अपना दूध प्रदान करें।"

यह कहकर बालक शिवा दुहने लगा शेरनी का दूध। फिर क्या था, शेरनी भी उसकी बातों को समझकर अपनी ममता उड़लने लगी।

बालक शिवा जब सिंहनी का दूध लेकर पहुँचा गुरु के पास, तो गुरु उसको गले लगाकर बोले– "तुम्हें इसी तरह देश व संस्कृति की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहना पड़ेगा। अभी ऐसी बहुत सी परीक्षाओं से तुम्हें गुजरना पड़ेगा। अत्याचारियों के विरुद्ध सनातन संस्कृति का परचम तुम्हें ही लहराना होगा।"

बुद्धि, साहस, निर्भीकता व प्राण शक्ति से भरपूर बालक शिवा कोई और नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति की मशाल, मराठा साम्राज्य का सूर्य छत्रपति शिवाजी महाराज थे।

शिवाजी महाराज का जन्म महाराष्ट्र के पुणे जिले के निकट शिवनेरी दुर्ग में 19 फरवरी, 1630 को हुआ था। उनके पिता शाहजी भोंसले एक प्रतिष्ठित व शक्तिशाली सामंत थे। उनकी माता जीजाबाई धार्मिक व असाधारण महिला थीं। शिवाजी महाराज के बचपन का अधिकतर समय माता जीजाबाई तथा शस्त्र व शास्त्र में निपुण ब्राह्मण दादोजी कोंडदेव की देखरेख में बीता। माता जीजाबाई उन्हें रोज रामायण, महाभारत व गीता का ज्ञान प्रदान करती थीं, जिससे उनमें साहस, विवेक व संस्कार का उदय हुआ। वहीं दादोजी कोंडदेव की देखरेख में उन्होंने युद्ध शैली व अस्त्र-शस्त्र का प्रशिक्षण लिया। बचपन में उनका नाम शिवाजी राजे भोंसले था। बचपन में वह युद्धाभ्यास व किले जीतने का खेल खेलते थे। यहीं से उन्होंने अपने युद्ध करने की छापामार व गुरिल्ला शैली विकसित की।

शिवाजी महाराज ने 16 वर्ष की उम्र में ही पुणे के पास तोरण दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। 1640 में जब वह 10 वर्ष के ही थे, उनका विवाह सहबाई निम्बालकर के साथ लाल महल पूना में सम्पन्न हुआ। इन्हीं से उत्पन्न पुत्र संभाजी माराठा साम्राज्य के उत्तराधिकारी बने। राजनीतिक कारणों से उन्होंने कुल आठ विवाह किए। मराठा सरदारों को एक करने का यह अहम पड़ाव बना।

शिवाजी महाराज की छापामार शैली इतनी मजबूत थी कि दुश्मन हक्का-बक्का रह जाता था। जहाँ युद्ध की जरूरत थी, वहाँ युद्ध किया। जहाँ युक्ति से काम चल सकता था, वहाँ युक्ति का प्रयोग किया।

रोहिदेश्वर का दुर्ग सबसे पहला दुर्ग था, जिस पर उन्होंने अधिकार प्राप्त किया था। जबकि तोरण का दुर्ग उन्होंने युक्तिपूर्वक आदिलशाह से प्राप्त किया था। अपनी छापामार शैली से उन्होंने 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित राजगढ़ दुर्ग पर भी अपना अधिकार जमा लिया। इसके

बाद अगला पड़ाव चाकन दुर्ग व कोंढाण दुर्ग था, जिस पर उन्होंने सफलतापूर्वक अधिकार प्राप्त किया।

आदिलशाह उनकी साम्राज्यवादी नीति से क्षुब्द हो उठा। उसने अपने सेनापति अफजल खाँ को भेजा, उन्हें गिरफ्तार व खत्म करने के लिए। जब वह शिवाजी को पकड़ पाने में असफल रहा, तो उसने सुलह का प्रस्ताव शिवाजी के पास भेजा, जिससे छलपूर्वक उनकी हत्या कर दी जाए। शिवाजी महाराज यह पहले ही समझ चुके थे। आठ फुट लम्बे व विशाल देह के स्वामी अफजल खाँ ने गले लगाकर शिवाजी महाराज को जकड़ लिया और पीठ पर छुरे से वार कर दिया। शिवाजी पहले से ही तैयार थे। हाथ में पहने बाघनख से उन्होंने अफजल खाँ का पेट फाड़ डाला। अपने सेनापति को मृत देखकर आदिलशाह की सेना भाग खड़ी हुई।

सन् 1659 में शिवाजी ने बीजापुर पर अधिकार कर लिया। 1664 में उन्होंने सूरत पर आक्रमण कर बहुत सारी धन-सम्पत्ति प्राप्त की। सूरत उस समय पुर्तगालियों का उपनिवेश बन चुका था।

मुगलिया सल्तनत का बादशाह औरंगजेब भी शिवाजी की बढ़ती ताकत से चिन्तित हो उठा। 1663 ई0 में मुगल सेनापति शाइस्ता खाँ को औरंगजेब ने शिवाजी के विरुद्ध भेजा। यहाँ शिवाजी ने शक्ति की जगह युक्ति से काम लिया। उस समय बरसात के दिन थे। शाइस्ता खाँ बरसात खत्म होने के इन्तजार में पूना में ही रुक गया। शिवाजी ने इसका फायदा उठाया। अपनी छापामार युद्ध शैली से उन्होंने 400 सैनिकों के साथ बारात का बहाना बनाकर पूना छावनी पर अचानक से आक्रमण कर दिया। इसमें शाइस्ता खाँ का बेटा मारा गया। शाइस्ता खाँ बहुत मुश्किल से बच पाया अपनी चार उँगलियाँ गँवाकर।

इस पराजय से मुगल बादशाह औरंगजेब को भारी धक्का लगा। सन् 1665 में उसने विशाल सेना के साथ राजा जय सिंह और मुअज्जम को भेजा इस हार का बदला लेने। इस बार लड़ाई में मराठों का नुकसान हुआ। उनका सेनापति मुरार नाडेय शहीद हो गया। देश की सलामती हेतु शिवाजी ने विवश होकर संधि प्रस्ताव भेजा। इसे पुरंदर की सन्धि (22 जून, 1665) के नाम से जाना गया। समझौते के तहत 35 जिले व 40 लाख हून उन्हें मुगल दरबार को देनी पड़ी। साथ उनके पुत्र संभाजी को मुगल दरबार में 5000 का मंसब दिया गया उसकी हाजिरी के लिए।

संधि के अनुसार 1666 में शिवाजी अपने पुत्र संभाजी के साथ दरबार में उपस्थित हुए। किन्तु उचित सम्मान नहीं मिलने पर वह क्रोधित हो उठे। औरंगजेब को इसी का इन्तजार था। उसने उन्हें बंदी बना लिया। उसका इरादा उनकी हत्या करने का था। किन्तु बुद्धि चातुर्य व साहस

से युक्त शिवाजी कहाँ से हार मानने वाले थे। कैद में ही उन्होंने बीमारी का बहाना किया। गरीबों में फल व खाने-पीने का सामान देने की योजना बनाई। और बड़ी चालाकी से एक दान के टोकरे में छिपकर वहाँ से भाग निकले। मुगल दरबार में जब यह खबर लगी, तो सभी दंग रह गए। इसके बाद फिर शुरू हो गया खोए दुर्ग को पाने का प्रयत्न।

इसमें कोंढाना का दुर्ग महत्त्वपूर्ण था, जिस पर एक फिल्म भी बन चुकी है। तानाजी द अनसंग वांरियर, जो जनवरी, 2020 में रिलीज हुई थी।

कोंढाना दुर्ग पर फहराता हरा ध्वज माता जीजाबाई को अखर रहा था। वह शिवाजी से बोली– "जब तक इस पर भगवा नहीं फहरेगा, मैं उपवास रखूँगी।"

पहाड़ी व परिस्थितियों को देखते हुए इस पर विजय पाना कठिन था। शिवाजी इसे बाद में विजय करना चाहते थे। किन्तु माता की आज्ञा थी।

शिवाजी ने जब सरदारों से बात की, तो किसी का साहस नहीं हुआ उसको जीतने के लिए। ऐसे में सामने आए तानाजी मालुसरे। वह शिवाजी के बचपन के मित्र व अधिकतम युद्धों में उनके साथी रहे थे। पुत्र के विवाह की तैयारियों को छोड़कर वह चल पड़े माता जीजाबाई की इच्छा पूरी करने। 342 सैनिकों के साथ उन्होंने युक्तिपूर्वक कोंढाना किले पर आक्रमण कर दिया। इस किले पर उदयभान राठौर का नियन्त्रण था। वह 5000 सैनिकों के साथ तानाजी से लड़ा। भयंकर युद्ध हुआ और किले पर तानाजी मालुसरे को जीत मिली। किले पर तो नियन्त्रण स्थापित हो गया। किन्तु तानाजी मालुसरे वीरगति को प्राप्त हुए। शिवाजी महाराज इससे बहुत दुखी हुए। वह बोले– "गढ़ आला, पण सिंह गेला।" अर्थात दुर्ग तो जीत लिया, किन्तु सिंह को खो दिया।

सन् 1674 में उन्होंने मराठा साम्राज्य की नींव रखते हुए रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। रायगढ़ में उनका राज्याभिषेक हुआ। यहीं उन्हें छत्रपति की उपाधि मिली और शिवजी महाराज हो गये छत्रपति शिवाजी महाराज।

महाराजा बनने के बाद भी वह गुरु रामदास की शिक्षा नहीं भूले, जिसमें उन्होंने कहा था– "राजा वास्तव में प्रधान सेवक है। अन्य सेवकों की तुलना में उसकी जिम्मेदारी व समझ ज्यादा होनी चाहिए।"

एक बार शिवाजी अपने बगीचे में घूम रहे थे। तभी एक पत्थर तेज गति से आकर उनके माथे पर लगा। माथे से खून बहने लगा। वह गुस्से से बोले– "कौन है, जिसने यह हरकत की है।"

एक वृद्ध महिला डरते हुए सामने आई और बोली– "महाराज क्षमा करें। मैं

आपको देख नहीं पाई। मैं पत्थर फेंक कर आम तोड़ रही थी।"

उसकी बातें सुनकर शिवाजी हाथ जोड़ कर बोले– क्षमा तो मुझे करो माई। यह पेड़ पत्थर खाकर भी शांत है और आम दे रहा है। मैं स्वार्थी ठहरा, इसलिए क्रोधित हो उठा।"

वह वृद्ध महिला को स्वर्ण मुद्राएँ देते हुए बोले– "इनसे तुम फल व अन्य चीजें खरीद सकती हो। अधिक आवश्यकता पड़ने पर मुझे फिर आज्ञा दे देना।"

1677-78 ई0 में शिवाजी ने कर्नाटक का रुख किया। मुम्बई के दक्षिण में कोंकण, मैसूर, त्रिचूर, धारवाड़ (कर्नाटक), जिंजी (तमिलनाडु में) व तुंगभद्रा नदी के पश्चिम में बेलगाँव पर अधिकार प्राप्त किया।

शिवाजी महाराज ने मराठी व संस्कृत भाषा को अपनी राज्य भाषा घोषित किया। उन्होंने प्राचीन हिन्दू राजनीतिक प्रथाओं व दरबारी शिष्टाचारों के नियम को दोबारा जीवित किया। सेना को अनुशासित व देश प्रेम से पूर्ण बनाया। छापामार युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) की नई शैली शिवसूत्र विकसित की। प्रशासनिक इकाइयों को सही रूप से संगठित किया।

शिवाजी तुलजा भवानी के उपासक थे, जो उनकी कुल देवी थी। उनका मन्दिर महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले के तुलजापुर में स्थित है।

मान्यता है, माता तुलजा भवानी ने स्वयं प्रकट होकर शिवाजी को तलवार भेंट की थी, जो आज भी लंदन के एक संग्रहालय में सुरक्षित है।

शिवाजी ने साम्राज्य को तीन से चार प्रान्तों में बाँटा था। प्रत्येक प्रान्त का एक सूबेदार था, जिसके पास आठ मंत्रियों की परिषद थी, जिसको अष्ट प्रधान कहते थे। लिखा-पढ़ी करने वाले 'सचिव' व विदेश कार्य देखने वाले 'सुमंत' कहलाते थे। धार्मिक कार्य व दान देखने वाले को 'पंण्डितराव' कहते थे। न्याय करने वाले को न्यायाधीश तथा राजस्व व वित्तीय कार्य करने वाले को 'अमात्य' बोलते थे।

जीवन के आखिरी समय में वह बीमार थे। तेज पेट दर्द से पीड़ित थे। 3 अप्रैल, 1680 को रायगढ़ में 50 वर्ष की आयु में हिन्दू साम्राज्य की स्थापना करके, वह आगे की यात्रा के लिए प्रस्थान कर गए।

मुम्बई में उन्हीं के नाम से छत्रपति शिवाजी महाराज अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है। मुम्बई में ही छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय है। इसके अलावा अनेक स्थानों व राज्यों में उनके नाम से स्मारक, रोड व जगहों के नाम हैं।

☐ 555ग/86ख/14, सुभाष नगर, जाफर खेड़ा, लखनऊ-226023, **मो.नं.**-9335461733

आमदनी

□ संदीप पांडे

"बारहवीं तो खैर जैसे-तैसे पढ़ ली, अब किताब में टका नहीं लगता। सोच रहा हूँ कोई काम धंधा शुरू कर दूँ। क्या कहती हो अम्मी ?" फिरोज ने तौलिए से बाल पोंछते पूछा।

"देख ले, तुझे जैसा ठीक लगे। तेरे अब्बू तो काम शुरू करने मे कोई मदद न दे पाएँगे।"

"हाँ मुझे पता है अम्मी, मैं सोच रहा हूँ नाश्ते का एक ठेला लगा लूँ। चौखटे पे सुबह बहुत सारे मजदूर इकट्ठा होते हैं। उनके लिए पोहा और पराठा सस्ते दाम पर खिलाऊँगा। पैसे को साथ पुण्य, दोनों की कमाई हो जाएगी।"

"अरे, पर तू शुरू करने के पैसे कहाँ से लाएगा। घर में तो हजार रूपए भी नहीं हैं। कम से कम दस हजार की जरूरत तो पड़ेगी ही पड़ेगी।"

"हमने अजीत अंकल से उधार लेने का सोचा है। रहीम चाचा भी दे सकते हैं, पर अगले महीने शबनम आपा की शादी है। उनसे माँगना ठीक न होगा। एक बार काम जम गया तो आठ दस हजार महीने के कमा ही लूँगा। फिरोजा और फखरूद्दीन पढ़ने में ठीक हैं। इनकी पढ़ाई में फिर कोई व्यवधान नहीं आएगा।"

अम्मी अवाक मुँह से फिरोज का चेहरा तक रही थी। सजल आँखें अचानक बड़े हो गए बेटे पर आशीष बरसा रही थीं।

"यार मदन, मेरे साथ शाम को चल दियो। काम के लिए ठेला तैयार कराया है। उसको तुझे दिखाना भी है और लाने में मदद भी चाहिए।"

"ओहो, तो अब हवाई जहाज उड़ाने के सपने देखने वाला दोस्त, सड़क पर ठेला

दौड़ाएगा !" मदन ने बिना सोचे समझे कह दिया, पर फिरोज ने दिल पर नहीं लिया। बोला– "हाँ भाई, सपने में तो अब भी जहाज ही उड़ेंगे, पर जमीन पर चार पहिए ठेले के ही मजे ले लेते हैं।"

'स्वस्थ भोजन कॉर्नर', ठेले पर सामने टीन के बोर्ड पर लिखा देख मदन और फिरोज कुछ पल एकटक निहारते रहे। फिर 6 × 4 फिट की सम्पत्ति पर लाड़ बरसाता फिरोज, मदन को समझाने लगा– "देख, यहाँ पर गैस चूल्हा आएगा। यहाँ भगोने और एक बड़ी कढ़ाई रखूँगा। भगोने में सब्जी गरम मिलेगी। कढ़ाई मे पोहे तैयार होंगे। दूसरी तरफ गरम-गरम पाँच तरह के पराँठे बनाने की व्यवस्था रहेगी।"

"अबे इतना सब तू अकेले कैसे सँभालेगा। थोड़े दिन तेरी मदद को मैं आ जाऊँगा।"

"नहीं मदन, मेरे काम की आदत तो मुझे ही डालनी पड़ेगी। मेरे हाथ से बने खाने का जब स्वाद लेना हो, तब बाकी यारों के साथ आ जाना।" फिरोज की आवाज में स्नेह से लिपटा धन्यवाद झलक रहा था।

जुम्मे के दिन सुबह-सुबह ठेला नियत जगह पर पहुँच गया। कुछ लोग पहुँचते ही जिज्ञासावश फिरोज से सवाल करने लगे– हाँ भई, क्या खिला रहे हो ?"

"आलू, प्याज, पालक और गोभी पराँठा पाँच रुपए, पनीर पराँठा दस रुपए। पोहा रतलामी सेव के साथ छह रुपए प्लेट।"

"अच्छा जरा बनाओ तो दो पनीर के पराँठे। आज टिफिन नहीं ला पाए हैं।" बीस बरस के दो अलमस्त मजदूरों ने पहला आर्डर दे डाला।

"बस पाँच मिनट," बोलकर फिरोज बिजली की गति से हाथ चलाने लगा। पहले से ही तैयार माल को आटे की लोई से पराँठे का रूप देने में ज्यादा देर नहीं लगी। अम्मी के साथ छुट्टी के दिनों में खाना बनाने में सहयोग करना काम आ रहा था। धनिए, टमाटर की चटनी के साथ, पराँठा चार मिनट में ही कागज की प्लेट पर सजकर तैयार था। अगले पाँच मिनट बाहरी मौन रहा। फिर कानों ने सुना– "वाह हीरो, क्या स्वाद बनाया है। आत्मा तृप्त हो गई।"

"सुन, अब तो रोज सुबह हम यहीं खा लिया करेंगे।"

फिर दो घंटे कैसे बीते फिरोज को पराँठा बेलते और पोहा लगाते, पता ही नहीं चला। ग्राहक और थे, पर माल सारा खत्म। गल्ला गिना तो दो हजार रुपए।

अम्मी के हाथ पर जब हजार रुपए रखे, तो वे अवाक रह गई। कभी फिरोज का मुँह देखती, तो कभी पाँच सौ के दो नोट।

फिरोज को बाँहों में भरकर अनेक दुआओं से लाद दिया। पहले दिन ने ही फिरोज को आत्मविश्वास से लबरेज कर दिया। एक माह में ही स्वस्थ भोजन कार्नर चर्चा का विषय बन गया। ठेले को भी फिरोज ने सजा कर नया रूप-रंग दे दिया था। हर सुबह गुलाब की सुगंध वाली अगरबत्ती चौखटे पर बैठने वाले मजदूरों के लिए भी ऊर्जा का स्रोत बन गई। सामने फूलों की दुकान पर बिकने वाले फूलों से ज्यादा सबको फिरोज का ठेला आकर्षित करता था। उसकी आमदनी बढ़ गई थी।

□ पुष्कर रोड, कोटरा, अजमेर-305004 (राजस्थान), **मो.नं.**-9414070143

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, साक्षरता निकेतन के वर्तमान सदस्य

1.	श्री रवीन्द्र सिंह, आई.ए.एस. (से.नि.)	अध्यक्ष
2.	प्रोफेसर जे० वी० वैशम्पायन	उपाध्यक्ष
3.	श्री एन०के०एस० चौहान, आई.ए.एस. (से.नि.)	कोषाध्यक्ष
4.	न्यायमूर्ति राजमणि चौहान (से.नि.)	सदस्य
5.	पद्म भूषण एवं पद्मश्री श्री चण्डी प्रसाद भट्ट	सदस्य
6.	श्री वाई.एस.के. सेशु कुमार	सदस्य
7.	श्री राजीव निगम, मुख्य अभियन्ता (से.नि.) उ०प्र० जल निगम	सदस्य
8.	श्रीमती नलिनी गर्ग	सदस्य
9.	सचिव, विद्यालयी शिक्षा एवं साक्षरता, भारत सरकार	सदस्य
10.	कृषि उत्पादन आयुक्त, उ०प्र० शासन	सदस्य
11.	अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन	सदस्य
12.	कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ	सदस्य
13.	कुलपति, जी०बी० पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि०वि०, पंतनगर	सदस्य
14.	कुलपति, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ० वि०वि०, कानपुर	सदस्य
15.	कुलपति, नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद	सदस्य
16.	अध्यक्ष, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली	सदस्य
17.	श्रीमती सन्ध्या तिवारी, आई.ए.एस. (से.नि.)	सचिव

रसभरी मीठी जलेबी

□ पूनम पाण्डेय

मिठाइयों का जिक्र होते ही जलेबी का नाम जरूर याद आता है। यह एक ऐसी मिठाई है, जिसकी चर्चा मात्र से मुँह में पानी आ जाता है। यह भारत समेत कई अन्य देशों में लोकप्रिय मिठाई है। जलेबी न केवल देखने में सुंदर दिखती है, बल्कि चीनी की चाशनी में डुबोकर ही बनाई जाती है। कई बार विदेशी लोग जलेबी को ही भारतीय मिठाई समझ लेते हैं। जो भी हो, कुरकुरी जलेबी अपने स्वाद की वजह से मिठाइयों में अपना विशिष्ट स्थान रखती है, और खाने वालों को अपना दीवाना बना देती है।

जलेबी का इतिहास : जलेबी भारत की सबसे लोकप्रिय मिठाइयों में से एक है। भारत के साथ-साथ पाकिस्तान, ईरान और मध्यपूर्व एशिया में भी यह खूब लोकप्रिय है। जलेबी खमीरयुक्त मैदे के घोल से गोल-गोल या अनियमित आकार में घी में तल कर बनाई जाती है, जिसे बाद में चीनी की चाशनी में डुबोकर तैयार किया जाता है। यह अत्यन्त ही स्वादिष्ट मिठाई है, जिसे गर्म-गर्म खाने का मजा ही कुछ और है।

जलेबी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई मत हैं। जलेबी को अरबी में जलाबिया, और फारसी में जुलबीआ कहा जाता है। इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में मध्यपूर्व एशिया दावेदारी पेश करता है। और हो भी क्यों नहीं, मध्यकालीन एक किताब 'किताब-

अल-तबीज' में जलाबिया नाम की एक मिठाई का वर्णन मिलता है, जो इस दावे की पुष्टि करता है। आज भी ईरान में 'जुलाबिया' नामक किताब में इसे बनाने की कई विधियों का वर्णन मिलता है।

वैसे जलेबी बनाने की विधियों का वर्णन भारत की पुस्तकों में भी मिलता है। सत्रहवीं शताब्दी की पुस्तक भोजन कुतूहल और संस्कृत पुस्तक गुण्यगुणबोधनी में इसे देखा जा सकता है। शरदचंद्र पेंढारकर में इसे कुण्डलिका कहा गया है। जलेबी के कई नाम मिलते हैं। प्राचीन नामों की बात करें, तो कुण्डलिका और जल वल्लिका का वर्णन तो प्राचीन किताबों में भी मिलता है।

जलेबी नाम क्यों पड़ा : कदाचित मीठे जल से परिपूर्ण होने की वजह से यह जलेबी हो गया होगा, या फिर जलाबिया या जुलबिया ही बदलते-बदलते जलेबी हो गया हो। भारत और पाकिस्तान में इसे जलेबी कहा जाता है। महाराष्ट्र में इसे जिलेबी या जिलबी कहा जाता है। नेपाल में जेरी, जबकि बंगाल में इसे जिलपी बोला जाता है।

क्या है चोटहिया जलेबी : उत्तर प्रदेश और बिहार के कुछ हिस्सों में एक प्रकार की और जलेबी मिलती है, जिसे चोटहिया जलेबी कहा जाता है। इस जलेबी में खासियत यह होती है कि इसमें चीनी की चाशनी की जगह गुड़ की चाशनी का प्रयोग होता है। गुड़ की वजह से जलेबी में एक अलग ही सोंधा-सोंधा स्वाद आ जाता है।

विदेशी पर्यटक जब भारत आते हैं, तो जलेबी खाकर बहुत खुश होते हैं। क्योंकि इसकी मिठास मन और मष्तिष्क दोनों को आनंद से भर देती है। इसमें रंग लाने के लिए केसर का प्रयोग भी होता है। जलेबी मैदे के घोल से बनाई जाती है। इसे बनाने के लिए मैदे में खमीर का उठना आवश्यक माना जाता है। तभी वह स्वाद देती है।

जलेबी का आकार गोल लच्छेदार होता है। ज्यादातर जलेबी कड़क और करारी होती है। वहीं हैदराबाद की जलेबी नर्म और खुशबूदार होती है।

जलेबी का स्वाद गर्म-गर्म खाने में है। कुछ लोग इसे ठन्डे दही में डालकर इसके जायके का मजा लेते हैं। जलेबी को अधिकतर सुबह या शाम नाश्ते के साथ खाया जाता है। मध्य प्रदेश में इन्दौर की पोहा जलेबी सारी दुनिया में प्रसिद्ध है। बातों की जलेबी छानना एक जाना माना मुहावरा है, जिसका मतलब यह है कि जलेबी की तरह गोल-गोल घुमाकर बात मत करो, सीधे बोलो। सही मुद्दे पर आ जाओ।

पुष्कर रोड, कोटरा, अजमेर-305004 (राजस्थान)
मो.नं.-9828792720

इस माह पड़ने वाले व्रत और त्यौहार

□ डॉ० शोभा अग्रवाल 'चिलबिल'

मौनी अमावस्या : यह पर्व माघ मास की कृष्ण पक्ष अमावस्या को मनाया जाता है। प्रचलित कैलेंडर के अनुसार यह दिन 1 फरवरी, 2022 को पड़ रहा है।

ऐसी मान्यता है कि इस दिन महर्षि मनु का जन्म हुआ था। इस दिन मौन रहने का विशेष महत्त्व है। वैसे भी यह माना जाता है कि मौन रहने से आत्मबल बढ़ता है। यदि इस दिन गंगा स्नान करने का अवसर मिल सके, तो बहुत अच्छा है।

बसन्त पंचमी (सरस्वती पूजा) : यह पर्व माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है। प्रचलित कैलेंडर के अनुसार यह दिन इस बार 5 फरवरी, 2022 को पड़ेगा।

बसंत को ऋतुराज कहा जाता है। यह पर्व ऋतुराज बसंत की अगवानी की सूचना देता है। इस दिन से होरी तथा घामर के गीत प्रारम्भ किये जाते हैं। गेहूँ तथा जौ की बालियाँ सरस्वती माता को अर्पित करके पूजन किया जाता है।

इस पर्व को श्री पंचमी भी कहते हैं। श्री अर्थात् लक्ष्मी। लक्ष्मी धन की देवी हैं। धन पाने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है। सरस्वती जी विद्या बुद्धि की देवी हैं। इसलिए सरस्वती माता के साथ लक्ष्मी माता का पूजन भी किया जाता है।

सूर्य सप्तमी : यह पर्व माघ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को मनाया जाता है। प्रचलित कैलेंडर के अनुसार यह दिन 7 फरवरी, 2022 को पड़ेगा।

इस दिन सूर्य भगवान की आराधना का विशेष महत्त्व है। इस दिन सूर्य को गंगाजल का अर्घ्य देना चाहिए। यदि गंगाजल उपलब्ध न हो, तो साधारण जल का अर्घ्य भी दिया जा सकता है।

वैसे तो रोज सुबह सूर्योदय के पहले ही स्नान कर लेना चाहिए, और सूर्योदय होते ही उगते हुए सूर्य की ओर मुँह करके जल देना चाहिए। इससे चर्मरोगों सहित समस्त रोग ठीक होते हैं।

गायत्री मन्त्र का मूल अर्थ ही यही है कि हम उगते हुए सूर्य का वरण करें।

भीमाष्टमी व्रत : यह व्रत माघ मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को किया जाता है। प्रचलित कैलेंडर के अनुसार यह व्रत 8 फरवरी, 2022 को पड़ेगा।

भीष्म महारानी गंगा और हस्तिनापुर नरेश शान्तनु के पुत्र थे। बाल ब्रह्मचारी भीष्म पितामह को इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त था। महाभारत युद्ध में कौरवों की हार के बाद उन्होंने मृत्यु का वरण किया। उन्होंने माघ मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को सूर्य के उत्तरायण होने पर अपना शरीर त्यागा था। उनकी याद में यह व्रत किया जाता है।

जया एकादशी व्रत : यह पर्व माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाया जाता है। प्रचलित कैलेंडर के अनुसार यह दिन 12 फरवरी, 2022 को पड़ेगा।

इस दिन भगवान कृष्ण की पूजा की जाती है। ऐसी मान्यता है कि इस व्रत को करने से प्रेत योनि नहीं मिलती है। पूर्व जन्मों के पापों से भी मुक्ति की संभावना होती है।

माघ पूर्णिमा और संत रविदास जयन्ती : यह पर्व माघ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। प्रचलित कैलेंडर के अनुसार यह दिन 16 फरवरी, 2022 को पड़ेगा।

इस दिन संत रविदास जी का जन्मदिन भी है।

माघ पूर्णिमा का बहुत महत्त्व है। महीने भर जो तीर्थों में कल्पवास किया जाता है, उसका समापन माघी पूर्णिमा को होता है। प्रयाग में तो पूरे महीने माघ मेला लगता है।

इस दिन सुबह स्नान करके भगवान विष्णु की पूजा की जाती है।

जानकी नवमी : यह पर्व फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की नवमी को मनाया जाता है। प्रचलित कैलेंडर के अनुसार यह दिन 25 फरवरी, 2022 को पड़ेगा।

वैष्णव धर्मग्रन्थों के अनुसार इस दिन माता जानकी जी का जन्म हुआ था। इस दिन सुहागिन स्त्रियाँ समस्त सुहाग सामग्री के साथ माता सीताजी की पूजा करती हैं। ऐसी मान्यता है कि जिस प्रकार माता पार्वती ने सीताजी को आशीर्वाद दिया था, उसी प्रकार सीताजी भी व्रत रहने वाली स्त्री को आशीर्वाद देती हैं–

'अचल रहे अहिबात तुम्हारा, जब लगि गंग जमुन जल धारा।'

ऐसी मान्यता है कि इस व्रत को करने से सन्तान लाभ होता है और मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

विजया एकादशी व्रत : यह पर्व माघ मास की कृष्ण पक्ष एकादशी को मनाया जाता है। प्रचलित कैलेंडर के अनुसार यह व्रत 27 फरवरी, 2022 को पड़ेगा।

इसकी कथा भगवान राम की लंका विजय से जुड़ी है। ऐसी मान्यता है कि भगवान राम ने लंका विजय हेतु सागर पार करने से पहले यह व्रत किया था।

इस दिन भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। धूप, दीप, नारियल तथा प्रसाद आदि चढ़ा कर विधिवत पूजा की जाती है।

ऐसा माना जाता है कि इस व्रत को करने से सभी दु:ख-दारिद्र दूर हो जाते हैं, और हर कार्य में सफलता मिलती है।

□ द्वारा श्री निखिल दीक्षित, सी-1631/7, राजाजीपुरम लखनऊ-226017, मो.नं.-8882161295

बसंत के दोहे

□ वसीम अहमद नगरामी

पादप-पल्लव खिल उठे, आया जब मधुमास।
चहुँदिशि दिखने लग गया, ओज और उल्लास।।

ये बसंत का आगमन, कुदरत का सिंगार।
चप्पे-चप्पे पर यहाँ, बिखरे रंग हजार।।

पेंड़ों पर फिर आ गए, विहग बनाने नीड़।
देखो फिर हँसने लगे, देवदार और चीड़।।

हरी-भरी धरती हुई, सोने सा आकाश।
सूरज बिखराने लगा, फिर गुनगुना प्रकाश।।

कलियाँ भी खिलने लगीं, सुन करके गुंजार।
तितली करने लग गईं, भँवरों से मनुहार।।

आम्र वृक्ष पर कोयलें, खूब रही हैं कूक।
विरहन के मन उठ रही, स्मृतियों की हूक।।

लहक उठी है फिर धरा, महक उठा संसार।
ऋतु परिवर्तनशील है, बदले रंग हजार।।

हंसवाहिनी की कृपा, इतनी हुई अजीम।
मन में उपजे भाव सब, दोहे बने 'वसीम'।।

□ 10/42, नगराम बाजार लखनऊ-226303, मो.नं.-6394177350

लौट के बुद्धू घर को आए

□ डॉ० मोहम्मद अरशद खान

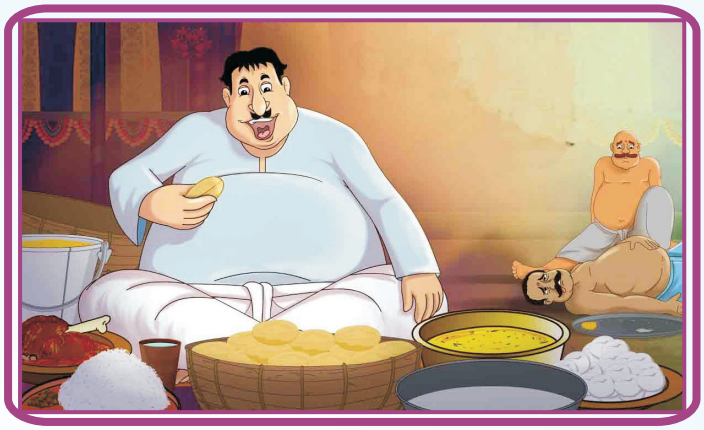

"अरे हजारा, जल्दी से चाय-पराठा लाओ। बड़ी भूख लग रही है।" पिटारा ने सुबह-सुबह करवट बदलते हुए कहा।

पर हजारा की तरफ से कोई उत्तर न मिला। थोड़ी देर इंतजार करने के बाद पिटारा ने फिर से अपनी बात दोहराई। पर इस बार भी जवाब न मिला तो वे उठ बैठे और इधर-उधर निगाह दौड़ाने लगे। हजारा कहीं नजर नहीं आ रहे थे। पिटारा ने आवाज दी– "हजारा, ओ हजारा, कहाँ चले गए ?"

फिर भी कोई उत्तर न मिला तो पिटारा चिंतित हो उठे। उन्होंने इधर-उधर, सब जगह देख डाला, पर सुबह-सुबह हजारा जाने कहाँ चले गए थे। वैसे तो वे सोने में माहिर थे। जब तक झिंझोड़ा न जाए, कान में चिल्लाया न जाए, ठंडा पानी उड़ेलने की धमकी न दी जाए, उठने का नाम नहीं लेते थे। लेकिन आज पिटारा के उठने से पहले ही जाने कहाँ रफूचक्कर हो लिए थे, वह भी बिना कुछ बताए।

पिटारा घबराए हुए कत्तो बुआ के घर पहुँचे।

"बुआ, आपने हजारा को कहीं देखा है ?" पिटारा ने उन्हें सारी बात बताई।

कत्तो बुआ हँसते हुए बोलीं– "अरे कल रात गर्मी थी, छत पर जाकर सोया होगा। जाकर फिर से देखो।"

"पर मैंने तो कई बार उसे तेज आवाज में पुकारा। अगर वह छत पर होता तो भी बोलता जरूर।" पिटारा घबराते हुए बोले।

"अरे हजारा कुंभकर्ण का भाई है। इतनी आसानी से जागने वाला नहीं। एक बार छत पर जाकर देखो।"

पिटारा वापस लौटे आए। छत पर देखा तो वहाँ कबूतरों के झुंड के अलावा कुछ नहीं था। पिटारा घबराकर रोने लगे।

घर के सामने भीड़ इकट्ठा हो गई। सब आपस में खुसर-पुसर करने लगे।

तभी पंडित गयादीन बोले– "सुबह-सुबह, मैंने किसी को जंगल की ओर जाते देखा था। धुँधलका होने के कारण पहचान न सका। हाँ, डील-डौल से हजारा जैसा ही लग रहा था।"

हजारा...जंगल की ओर ! आखिर क्यों...?

बहरहाल, सारी भीड़ जंगल की ओर दौड़ पड़ी। आगे-आगे पिटारा और पीछे-पीछे पूरा गाँव। थोड़ा खोजबीन करने के बाद हजारा एक बरगद के नीचे बैठे हुए मिल गए। पालथी मारे, आँखें बंद किए बैठे थे। उनका हुलिया देखकर सब हैरान रह गए। पगड़ी, कुर्ता, धोती सब गेरुए रंग में रंगे हुए, एकदम संन्यासियों जैसा भेष।

"यह क्या तमाशा बना रखा है, हजारा...?" पिटारा ने क्रोध और आश्चर्य से पूछा।

हजारा कुछ नहीं बोले। बस, आँखें बंद किए बैठे रहे।

कत्तो बुआ ने भी पूछा, रज्जो ताई भी चिल्लाईं, पर हजारा चुपचाप धूनी रमाए साधु की तरह बैठे रहे।

"अरे, मेरे हजारा को क्या हो गया, भगवान।" पिटारा रोने लगे।

"किसी भूत-प्रेत ने तो नहीं जकड़ लिया ?" गोपाल ने आशंका व्यक्त की।

"अरे कोई झाड़-फूँक करने वाले ओझा को बुलाओ।" बल्लू काका ने गोपाल के सुर में सुर मिलाया।

"चुप रहो सब," कत्तो बुआ डाँटती हुई बोलीं– "हजारा कैसे उठेगा, मैं जानती हूँ। बस देखते जाओ।" यह कहते हुए उन्होंने आगे बढ़कर हजारा के दोनों कान मरोड़ दिए। हजारा ने आँखें खोल दीं।

सब खुश होकर चिल्लाने लगे।

"हजारा, मेरे भाई, तुम यहाँ क्यों बैठे हो ? ऐसी क्या गलती हो गई, जो नाराज होकर बिना बताए चुपचाप यहाँ आकर बैठ रहे। चलो, अब नाराजगी छोड़ो और घर चलो।" पिटारा गिड़गिड़ाते हुए बोले।

"घर...?" हजारा स्थिर स्वर में बोले– "कौन-सा घर...? कैसा घर...? अब यही मेरा घर है।"

"क्या कह रहे हो हजारा..?" रज्जो ताई हैरत से बोलीं।

"तुम्हें तो हर घड़ी भूख लगती है। यहाँ तुम्हारा खाना-पीना कैसे चलेगा ?" कत्तो बुआ बोलीं।

हजारा उसी तरह शांत भाव से बोले– "भूख लगी तो कंद मूल खा लूँगा,

प्यास सताएगी तो नदी का शीतल जल पी लूँगा। अब सांसारिक मोह-माया से मुझे विरक्ति हो चुकी है।"

"पर ऐसे कब तक रह पाओगे, हजारा ?" पिटारा बोले।

हजारा अधखुली आँखों से शून्य में देखते हुए बोले– "यह शरीर नश्वर है, यह संसार नश्वर है। एक दिन सब कुछ नष्ट हो जाएगा। ये रिश्ते-नाते, घर-बार, धन-दौलत, मोह-माया सब यहीं धरे रह जाएँगे। इस जगत में उस परम सत्य के अलावा कुछ भी स्थाई नहीं है।"

"लेकिन हजारा..." पिटारा आगे बोलते कि हजारा ने फिर आँखें मूँद लीं।

सारा गाँव हजारा को समझा-समझाकर हार गया। हजारा टस से मस न हुए। आखिर सब लोग मुँह लटकाए वापस आ गए। सबसे उदास पिटारा थे। उनकी तो जैसे दुनिया ही उजड़ गई थी। दोनों का खाना-पीना, सोना-उठना सब साथ-साथ होता था। एक-दूसरे के बिना दोनों अधूरे थे। अब हजारा के बिना अकेले रह पाना पिटारा के बस में नहीं था। पर वह बेचारे कर भी क्या सकते थे। बार-बार मन में ख्याल आता कि क्यों न वे भी हजारा की तरह जंगल की ओर मुँह कर लें। पर गाँव वालों का ख्याल आते ही यह विचार मंद पड़ जाता।

धीरे-धीरे इसी तरह कई दिन बीत गए। न तो कोई हजारा की खबर लेने जंगल गया और न हजारा गाँव लौटे।

फिर एक दिन गाँव की तरफ से ढोल-मँजीरे बजने की आवाजें आने लगीं। हजारा बेचैन हो उठे। गाँव में उत्सव हो और वह मौजूद न हों ? ऐसा तो कभी हुआ नहीं। लाख ध्यान बँटाने के बावजूद मन भटकने लगा। भाँगड़ा बजते ही उनके पैर ऐसे थिरकने लगते थे, जैसे किसी ने खिलौने में चाबी भर दी हो। आवाज से बचने के लिए उन्होंने अपनी पगड़ी कानों पर कस ली। मंद ही सही, पर आवाज अब भी कानों में घुसी आ रही थी।

तभी एक और मुसीबत आ खड़ी हुई। मुसीबत...? हाँ, वैरागी के लिए मुसीबत ही समझिए। पुरवाई के झोंकों के साथ गर्मा-गर्म कचौड़ियों, मसालेदार सब्जियों और बूँदी के रसदार लड्डुओं की महक से उनके नथुने फड़कने लगे। इतने दिनों से चिड़ियों के कुतरे हुए फल, जंगल जलेबियाँ, मकोय वगैरह खाकर वह ऊब चुके थे। स्वादिष्ट पकवानों की महक नाक तक पहुँची तो मन भीतर तक झुरझुरा उठा।

हजारा सोचने लगे, 'इतने दिनों से घर-बार छोड़कर जंगल में पड़ा हूँ। मच्छरों ने काट-काट कर हाल-बेहाल कर दिया है। कमबख्तों को इतना भी नहीं पता कि साधु-संन्यासियों को काटने से पाप लगता

है। यहाँ रहकर न भूख मिटती है, न प्यास। कैसा तरसकर रह गया हूँ। सब कितना समझा रहे थे। बड़ों की बात मान लेनी चाहिए थी। आखिर अभी मेरी उम्र ही क्या है ? खाने-खेलने की उम्र में मैंने वैरागी बनने की हठ ठान ली। उधर गाँव वालों को देखो, सब कैसी खुशियाँ मना रहे हैं। कैसा नाच-गा रहे हैं। पिटारा तो अकेले खा-खाकर मोटा हो गया होगा।

हजारा पछताने लगे। एक मन उन्हें रोकता, तो दूसरा पूरी ताकत से गाँव की तरफ खींचता। इसी उहापोह में काफी देर हो गई। हजारा का माथा भन्नाने लगा। वे इतना मानसिक तनाव लेने के आदी थे नहीं। एकाएक उठे और गाँव की ओर दौड़ लगा दी। बेतहाशा दौड़ने के कारण पगड़ी हवा में उड़कर झंडे की तरह लहराने लगी। कुर्ते में हवा ऐसे भर गई, जैसे पैराशूट से उतर रहे हों।

गाँव में घुसते ही लोगों ने उन्हें घेर लिया। पिटारा के चेहरे पर चमक आ गई। अपनी योजना सफल होते देख उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। वे बनावटी अंदाज में बोले– "आइए, आइए, हजारा महाराज ! लगता है आपको ज्ञान की प्राप्ति हो गई ?"

"अरे काहे का ज्ञान ?" हजारा रुआँसे होकर बोले– "जंगल में मच्छरों ने काट-काट कर बुरा हाल कर दिया। सियार-लोमड़ियों ने जीना हराम कर दिया। इतने दिनों से पेट में अन्न का एक दाना नहीं गया। भूख के मारे अँतड़ियाँ कुलबुला रही हैं।"

"पर वैरागी महाराज, आपकी तपस्या भंग करने से हम लोगों को पाप लगेगा।" कत्तो बुआ बोलीं।

अब मैं कोई संन्यासी-वैरागी नहीं हूँ। मैं आप सबका वहीं हजारा हूँ, जो पहले था। हजारा रोते हुए बोले– "अब जल्दी से खाना खिला दो बुआ। बड़ी भूख लगी है।"

"खाना...? वह तो तुम्हें नहीं मिलेगा," रज्जो ताई बोलीं।

"लेकिन क्यों...?" हजारा 'माया मिली न राम' वाले अंदाज में बोले।

"पहले नहा-धोकर इंसान बनकर आओ। दूर से ही बदबू आ रही है।" कत्तो बुआ नाक सिकोड़कर बोलीं।

"हाँ बुआ, अब तुम सब जो कहोगे, वहीं करूँगा। मैं समझ गया कि ईश्वर हर कहीं है। संसार से प्रेम करना भी ईश्वर से ही प्रेम करना है।" कहते हुए हजारा घर की ओर भागे।

पिटारा उन्हें घर की ओर जाते देखकर ऐसा मुस्करा रहे थे, जैसे उन्हें कोई खजाना मिल गया हो।

□ एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जी0एफ0 (पी.जी.) कॉलेज, शाहजहाँपुर-242001 (उ.प्र.), मो.नं.-9807006288

सर्दी के मौसम में गरमागरम मोमो

□ शिखर चंद जैन

सर्दी के मौसम में कुछ गरमा-गरम और पौष्टिक खाने को मिल जाए, तो कैसा रहे ? जाहिर है मजा आ जाएगा ! कुछ नया मिल जाए तो यह मजा दोगुना हो जाएगा। ऐसे में भाप में पके, पौष्टिक सब्जियों से भरे मोमोज तीखे स्वाद वाले सूप और चटनी से खाइए। आप हमेशा के लिए सब्जियों की इस पोटली के मुरीद हो जाएँगे। लेकिन इससे पहले मोमोज के बारे में कुछ खास बातें जान लीजिए।

कहाँ से हुई शुरुआत : विशेषज्ञों का मानना है कि मोमो की उत्पत्ति तिब्बत या नेपाल में हुई। अभी तक यह तय नहीं हो पाया कि आखिर इन दोनों देशों में से पहले कहाँ मोमो बनाए गए। लेकिन यह तय है कि कई दशकों से इन क्षेत्रों के लोगों के लिए मोमो पसंदीदा भोजन रहा है।

आज भले ही मोमो में ताजी पौष्टिक सब्जियाँ भरकर खाई जा रही हों, लेकिन तिब्बत हिमालय के ठंडे क्षेत्र में होने की वजह से वहाँ सब्जियों की कमी थी। इसलिए मुख्य रूप से इसमें याक का मांस भरा जाता था। बाद में तिब्बती बड़ी मात्रा में वहाँ से पलायन करने लगे तो उनके साथ मोमो की रेसिपी भी दूसरे क्षेत्रों तक पहुँचने लगी। कुछ इतिहासकार मोमो की उत्पत्ति मंगोल शासनकाल से मानते हैं। तब कोरिया से लेकर उज्बेकिस्तान और जॉर्जिया में भी मोमो की तरह भरकर तैयार की जाने वाली डिश खाई जाती थी।

भ्रांत धारणा : कुछ लोग समझते हैं कि मोमो हमारे देश के उत्तरी पूर्वी राज्यों यानी त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैंड आदि का प्रमुख भोजन है। लेकिन ऐसा है नहीं। हाँ, वहाँ के प्रायः सभी होटल और रेस्टोरेंट्स में यह आसानी से उपलब्ध है। शिलांग, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में जरूर यह लंबे समय से वहाँ के लोगों के भोजन का प्रमुख हिस्सा है, जो वहाँ चीनियों की आवाजाही और उपस्थिति के कारण

हुआ है। यह अरुणाचल प्रदेश की मोनापा और शेरदुपका जनजातियों का प्रमुख भोजन है।

तरह-तरह के मोमो : आमतौर पर मोमो भाप में पकाए, फ्राई किए हुए, या सिंके हुए होते हैं। इनमें लोग अपनी संस्कृति और स्वाद के अनुसार ताजा सब्जियाँ (पत्ता गोभी, गाजर, मटर, प्याज पत्ती), माँस, पनीर आदि कुछ भी भर सकते हैं। लेकिन अब लोग चॉकलेट मोमो, ड्राई फ्रूट मोमो और तंदूरी मोमो भी बनाने लगे हैं। इन्हें लोग सूप और चटनी के साथ खाते हैं।

भाप वाले मोमो : यह मोमो सबसे आम है। इसमें सोया चंक, पनीर, सब्जियाँ आदि भरकर भाप में पकाया जाता है। यह एकदम मुलायम होता है। इसे सूप और सॉस व तीखी चटनी के साथ खाया जाता है ।

फ्राइड मोमो : तले हुए होने के कारण ये क्रिस्पी होते हैं। इन्हें सुनहरा होने तक फ्राई किया जाता है।

तंदूरी मोमो : यह मोमो का भारतीय प्रकार है। इसे तंदूर में पकाकर बनाया जाता है ।

चॉकलेट मोमो : मोमो बनाने वालों ने कभी नहीं सोचा होगा कि कभी नई पीढ़ी में इसमें चॉकलेट भरकर बनाया जाएगा। नई पीढ़ी को यह काफी पसंद है।

चिली मोमो : अगर आप अधिक मसालेदार खाने के शौकीन हैं, तो मिर्च के तीखे स्वाद वाले इस मोमो को सोया सॉस, चिली सॉस और केचप के साथ खाएँ।

कोथे मोमो : यह नेपाल में लोकप्रिय हैं। इन्हें कड़ाही में तलते हैं। इनमें तली हुई अदरक दूसरी चीजों के साथ में जरूर डाली जाती है। यह पौष्टिक भी माने जाते हैं ।

आटा मोमो : इन्हें मैदा के बजाय गेहूँ के आटे से बनाते हैं। इसलिए ये सेहत की दृष्टि से अधिक अच्छे होते हैं।

इसके अलावा और भी दर्जनों प्रकार के मोमो होते हैं, जो भरावन के अनुसार विविध स्वाद वाले होते हैं। इन्हें आप अपनी पसंद के अनुसार खा सकते हैं।

इतना बड़ा मोमो : दिल्ली के वसंत स्क्वायर मॉल में स्थित जैकीज चाइनीज रेस्तराँ ने भारत का सबसे बड़ा मोमो बनाकर स्वयं को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज करा लिया है। रेस्तराँ के मालिक गौरव सिंह ने बावर्चियों के साथ मिलकर 78 किलोग्राम वजन का 5 फुट व्यास वाला मोमो बना डाला। इसके लिए इन्हें 27 किलो मैदा, 25 किलो चिकन कीमा और 21 किलो प्याज एवं अन्य चीजों का इस्तेमाल करना पड़ा। इस मोमो को बनाने के लिए इन्होंने विशेष साँचा भी तैयार करवाया था। जिस दिन यह मोमो बनकर तैयार हुआ, उस दिन रेस्तराँ में सैकड़ों लोगों की भीड़ इसे देखने और चखने के लिए इकट्ठा हो गई थी।

□ 67/49, स्ट्रैण्ड रोड, तृतीय तल, कोलकाता-700007
मो.नं.-9836067535

डॉक्टर हावर्ड केली

□ डॉ० मोहन सिंह क्षत्रिय

एक गरीब परिवार का लड़का था, जो दैनिक जरूरत का सामान घर-घर जाकर बेचता था। उससे बचे पैसों से स्कूल की फीस भरता था। यह उसका नित्य का काम था। एक दिन वह गाँव में फेरी लगा रहा था। उसे खाने को कुछ मिला नहीं था। सो भूख से भी व्याकुल था।

उसने निश्चय किया कि अगले ग्राहक से वह सामान के पैसे न लेकर खाना माँग लेगा, और खाकर पेट की भूख शान्त कर लेगा। इसी आस में वह चक्कर लगाने लगा। एक अच्छा सा घर देख उसने घर पर दस्तक दी। अन्दर से एक लड़की निकली। लड़का सकुचा गया और उसने लड़की से एक गिलास पानी माँग लिया। लड़की अन्दर गई। उसने देखा कि लड़का कुछ घबराया हुआ सा भूख-प्यास से परेशान सा है। परिश्रम व गर्मी से शरीर से पसीना बह रहा है। वह एक गिलास दूध लेकर दरवाजे पर दाखिल हुई और लड़के की ओर दूध का गिलास बढ़ा दिया। लड़के ने दूध का गिलास ले लिया। दूध पीने से उसकी भूख व प्यास दोनों शान्त हो गई। उसने लड़की से एक गिलास दूध की कीमत पूछी। लड़की ने जवाब दिया– "उसकी माँ ने यह संस्कार दिए हैं, कि कोई द्वार पर भूखा-प्यासा आए तो उसका यथा-शक्ति सहयोग करें। चूँकि इस समय खाना समाप्त हो चुका है। अतः

एक गिलास दूध सेवा में पेश किया है। अतिथि सत्कार या सहयोग का कोई मूल्य नहीं होता।" लड़की ने खाली गिलास वापिस लिया और घर के अन्दर चली गयी।

लड़के ने लड़की का धन्यवाद किया और सामान बेचने के लिए आगे बढ़ गया।

बात आई गई हो गई। लड़का इसी प्रकार दैनिक जरूरत का सामान बेचता रहा और स्कूल की फीस भरता रहा ! एक समय आया, जब स्कूल कॉलेज से निकल कर उसने मेडिकल कॉलेज में दाखिला ले लिया।

अपनी लगन, मेहनत से कुछ समय बाद मेडिकल की डिग्री लेकर उस लड़के ने शहर में अपना एक अस्पताल खोला। उसकी मेहनत रंग लाई। अस्पताल चल निकला। उसका नाम सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त नामी-गिरामी अस्पतालों

में सुमार हो गया। इस डॉक्टर का नाम था– 'डॉ0 हावर्ड केली।'

एक दिन हावर्ड केली के अस्पताल में एक लड़की दाखिल हुई। उसके कागज देखकर हावर्ड केली को अपना बचपन याद आ गया।

यह उसी गाँव की लड़की थी, जहाँ डॉ0 हावर्ड केली बचपन में फेरी लगाकर सामान बेचा करते थे। उत्सुकता वश हावर्ड केली लड़की को स्वयं देखने के लिए उसका चेकअप करने पहुँचे। पहली नजर में ही उन्हें याद आ गया कि यह वही लड़की है, जिसने उन्हें भूख-प्यास से व्याकुल समय में एक गिलास दूध देकर उनकी मदद की थी। उन्होंने अस्पताल के सभी विशेषज्ञ डॉक्टरों को बारीकी से लड़की की जाँच कर इलाज करने में लगा दिया।

वर्तमान में उस लड़की की माँ की हालत पहले जैसी नहीं रही थी। प्रकृति ने उसका रूप बदल दिया था। सारी सम्पन्नता निर्धनता में बदल गई थी। अब वह बेसहारा और गरीब थी। बीमारी की अवस्था में गाँव वालों ने अस्पताल पहुँचा दिया था। वहाँ के स्टाफ ने लड़की की हालत गम्भीर देख हावर्ड केली के अस्पताल भेज दिया था।

खैर, यहाँ लड़की की हर तरह से देख-भाल हुई। बेहतर से बेहतर जाँच और इलाज दिया गया। परिणाम स्वरूप कुछ दिनों में लड़की स्वस्थ होने लगी। उसे होश आ गया था। जब उसे पता चला कि शहर के नामी-गिरामी अस्पताल में उसका इलाज हो रहा है, जहाँ का चार्ज बहुत ही ज्यादा है, तो वह सोच में पड़ गई। उसका दिल घबराने लगा। वह मन ही मन कहने लगी, 'हे भगवान ! मुझे क्यों बचाया। मेरे कोई रिस्तेदार या मित्र इतने सक्षम नहीं हैं, जो मेरी मदद कर सकें। अस्पताल का बिल मैं कैसे चुकाऊँगी !'

वह इसी उधेड़बुन में लगी थी, कि नर्स ने आकर लड़की को डिस्चार्ज होने की सूचना के साथ उसके हाथ में दवा का बिल थमा दिया। लड़की को जैसे होश आया। उसके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। पूरे पाँच लाख का बिल था, जो उसके इलाज का था। कँपकँपाते हाथों से लड़की ने बिल को ध्यान से देखा। बिल के ऊपर एक पर्चा और लगा था, जिस पर लिखा था– 'घबड़ाने या चिन्ता करने की कोई बात नहीं, आपका बिल वर्षों पहले ही चुका दिया गया था। धन्यवाद एक गिलास दूध !' नीचे डॉक्टर हावर्ड केली के हस्ताक्षर थे।

लड़की की आँखों में चमक आ गई। वह सच्चे हृदय से ऊपर वाले का धन्यवाद देने लगी। मन ही मन प्रार्थना करने लगी, उस भगवान रूपी डॉक्टर का, जिसने बिल का भुगतान किया था। अगले ही पल लड़की गम्भीर हो गई। भगवान से शिकायत करने लगी, कि मैं उस देव पुरुष का धन्यवाद कैसे करूँ। मैंने तो उसे देखा तक नहीं। कहाँ मिलेगा वह ?

जब लड़की ने आँखें खोली तो सामने हाथ जोड़े अस्पताल के मालिक डॉ0 हावर्ड केली को खड़े पाया। डॉ0 हावर्ड केली बोले– "मैडम, आपके प्यार, स्नेह से दिए गए एक गिलास दूध की प्रेरणा से ही मैं आज इस मुकाम पर हूँ। मुझे अपना भाई ही समझिए। मैंने आपके ऊपर कोई एहसान नहीं किया है। जब मैं दर-दर भटका करता था। प्यार से एक गिलास दूध देना याद कीजिए। उस एक गिलास दूध से मुझे कितना सुकून मिला था और मैंने मन ही मन निश्चय किया था कि अपनी मेहनत से एक दिन कामयाब होकर किसी के आड़े वक्त में काम आ सकूँगा। यही मेरा असली धन होगा।

यह संयोग ही है कि आज उस उपकार का सौवाँ हिस्सा ही सही, चुकाने का अवसर मिला। आप मेरी गुरु भी हैं। यह तुच्छ भेंट गुरु दक्षिणा रूप में स्वीकार करने की कृपा करें।" यह सुन लड़की आभार प्रकट करने के लिए डॉ0 हावर्ड केली से लिपट गई।

सच ही कहा है, कर्म कभी निष्फल नहीं होता है। जैसा कर्म किया जाता है, वह ब्रह्माण्ड में घूम-फिर कर कई गुना होकर वापस मिल ही जाता है। कर्म चाहे अच्छा हो या बुरा। हम जैसा कर्म करेंगे, वह कई गुना होकर हमें वापस मिलेगा ही। तो क्यों न दुष्कर्म की बजाय सत्कर्म किया जाय।

□ ग्राम-अजनौरा (वानपुर), ललितपुर (उ0प्र0)
मो.नं.-7897963974

ओमिक्रॉन है आया

□ उदय मेघवाल 'उदय'

कोरोना का नव वेरिएंट,
ओमिक्रॉन है आया।
आते ही फिर इसने अपना,
घातक रूप दिखाया।

कोरोना और डेल्टा से भी,
ज्यादा यह खतरनाक।
पकड़ में नहीं आता जल्दी,
जमाता ऐसी धाक।

मुश्किल से स्कूल खुले थे,
करा दिए फिर से बंद।
तेजी से यह फैल रहा,
इसकी गति करें मंद।

मुँह पर दोहरा मास्क पहनें,
रक्खें दो गज दूरी।
स्वयं बचें औरों को बचाएँ,
सतर्कता हो पूरी।

वैक्सीन के दोनों डोज,
पहले हम लगवाएँ।
फैलने से इसे रोकें
जड़ से इसे मिटाएँ।

□ मधुसूदन स्कूल के पास, कमधज नगर निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़-312601 राजस्थान
मो.नं.-9521505073, 7023667005

माली

□ डॉ० रंजना जायसवाल

रश्मि को बागवानी का बहुत शौक था। आए दिन कोई न कोई गमला या फूल घर में आता ही रहता। वह हमेशा कहती– "प्रकृति से जितना जुड़े रहो, उतना ही अच्छा है। फालतू बातों में दिन और मन क्यों खराब करना।" इधर वह कुछ अकेली सी हो गई थी। जब से बेटे को हॉस्टल में छोड़ कर आई थी, मन कुछ ठीक नहीं रहता था। आखिर करती भी क्या ? बच्चों के भविष्य के आगे इंसान कितना मजबूर होता है। माँ-बाप भी क्या करें, अपना भविष्य देखें, या फिर बच्चों का..? अभी वह सोच ही रही थी, कि दरवाजे पर माली बाबा की आवाज आई।

"आज बहुत देर कर दी बाबा...?" रश्मि ने पूछा।

"बगल वाले शर्मा जी ने बुला लिया था। उन्हें भी आपकी तरह बागवानी का शौक चढ़ आया है। देखा देखी पुण्य, देखा देखी पाप।"

"पाप की क्या बात है बाबा। अच्छी बात है, हम प्रकृति से इतना कुछ ले रहे हैं, तो उसे देने का फर्ज भी तो हमारा ही है।"

"ठीक कहती हो बिटिया, तुम पिछली बार बोली थी न, गेंदे के पौधे लेता आऊँ। देखना इस बार कॉलोनी में सबसे अच्छे गेंदे के फूल तुम्हारे यहाँ ही खिलेंगे।" रश्मि के चेहरे पर एक सहज मुस्कान आ गई। माली बाबा काम में जुट गए।

कुछ दिन बाद गेंदे के पौधों पर छोटी-छोटी कलियाँ आ गई थीं। रश्मि उनके सपनों में खो गई। कुछ ही दिनों में

इनमें फूल भी लगने लगेंगे। पर यह क्या ? माली बाबा ने बड़ी बेदर्दी से उन कलियों को तोड़ दिया।

"अरे यह क्या कर रहे हैं आप...!"

"बिटिया, पेड़ों को उनकी उम्र से पहले जिम्मेदारियों से लाद देना कहाँ तक सही है। अगर हमें उनकी अच्छी उन्नति देखनी है, तो थोड़ा त्याग तो करना ही होगा। देखना इसमें कितने खिलकर फूल आएँगे।"

रश्मि सोच रही थी, माली बाबा को जरा भी कष्ट नहीं हुआ फूलों की कलियों को तोड़ते हुए। आखिर उसने पूछ ही लिया– "बाबा, आप को कष्ट नहीं होता ! अपने ही हाथों से लगाए पेड़ों को काट देना, या फिर उनकी कलियों को तोड़ देना।"

"बिटिया एक बात बताओ। तुमने भी तो अपने एकलौते बेटे के अच्छे भविष्य के लिए उसे हॉस्टल भेज दिया न...। यह फूल भी तो मेरे बच्चों की तरह ही हैं। तो फिर मैं क्यों न उनके अच्छे भविष्य के बारे में सोचूँ।"

रश्मि उस सीधे-साधे माली बाबा का मुँह देख रही थी। इतनी सरल भाषा में उन्होंने जीवन के फलसफे को समझा दिया था।

□ लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही, मिर्जापुर-231001
मो.नं.-9415479796

भोजन नहीं करें बर्बाद

□ गौरीशंकर वैश्य विनम्र

गाँठ बाँध लें बात जरूरी,
भोजन नहीं करें बर्बाद।

बड़ा कीमती अन्न का दाना,
श्रम से पड़ता उसे उगाना,
जुटता है किसान खेतों में,
फसल को देता पानी-खाद।

प्रीतिभोज में जब भी जाएँ,
चुन - चुन रुचिकर व्यंजन खाएँ,
घर में हों अथवा रेस्त्रां में,
रखें उदर की भी कुछ याद।

भरें न पूरी प्लेट या थाली,
अति उत्तम, यदि आदत डाली,
खा पाएँ, उतना लें भोजन,
अच्छी सीख, न वाद-विवाद।

गया जो कूड़ेदान में भोजन,
तो समझें असफल आयोजन,
माना पैसे पड़ें न देने,
किंतु व्यर्थ हो गया प्रसाद।

सोचें जिसको मिले न खाना,
भूखे ही दिन पड़े बिताना,
खाना बचे तो दें गरीब को,
वह भी पाएगा आह्लाद।
भोजन नहीं करें बर्बाद।।

□ 117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ-226022
मो.न.-9956087585

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड की गतिविधियाँ

राज्य संसाधन केन्द्र, उ0प्र0

जैसा कि आप जानते हैं, डॉ0 वेल्दी हॉनसिंगर फिशर द्वारा साक्षरता निकेतन की स्थापना लखनऊ में सन् 1956 में निरक्षरों को शिक्षित और साक्षर बना कर उनके जीवन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से की गयी थी। श्रीमती वेल्दी फिशर ने यह कार्य उस समय आरम्भ किया था, जब इस ओर सरकार की ओर से कोई पहल नहीं की गयी थी।

बाद में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर 02 अक्टूबर, 1978 को राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इसी के साथ सरकार द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को शैक्षिक एवं तकनीकी संदर्भ सेवाएँ प्रदान करने के लिए देश भर में राज्य स्तर पर राज्य संसाधन केन्द्रों की स्थापना भी की गयी थी। राज्य संसाधन केन्द्र संचालित करने की जिम्मेदारी किसी न किसी ख्याति प्राप्त गैर सरकारी संस्था को दी गई थी। साक्षरता निकेतन की विशेष उपलब्धियों को देखते हुए भारत सरकार ने उत्तर प्रदेश के लिए राज्य संसाधन केन्द्र के रूप में मान्यता साक्षरता निकेतन को प्रदान की।

भारत सरकार द्वारा राज्य संसाधन केन्द्र के जो कार्य और उद्देश्य निर्धारित किए गए थे, वे इस प्रकार हैं–

- सरकार द्वारा संचालित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के संचालन में सहयोग करना एवं संदर्भ सेवाएँ प्रदान करना।
- प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में संलग्न शैक्षिक संस्थाओं, शिक्षण संस्थानों आदि को अकादमिक तथा तकनीकी संदर्भ सेवाएँ प्रदान करना।
- कार्यक्रम के लिए मूल साक्षरता सामग्री, उत्तर साक्षरता सामग्री तथा पूरक पठन-पाठन सामग्री का निर्माण, प्रकाशन एवं आपूर्ति करना।
- प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न चरणों के लिए प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना एवं प्रकाशित करना।

- जागरूकता एवं वातावरण सृजन हेतु प्रेरक सामग्री का निर्माण एवं प्रकाशन करना।
- भारत सरकार द्वारा तैयार प्रौढ़ शिक्षा प्रचार सामग्री का अपने राज्य की भाषा में अनुवाद करना तथा उसका प्रचार-प्रसार करना।
- विभिन्न स्तर के प्रौढ़ शिक्षा कर्मियों को प्रशिक्षण प्रदान करना।
- पंचायती राज संस्थानों के चुने हुए सदस्यों के लिए जागरूकता शिविरों का आयोजन करना।
- क्षेत्र कार्यक्रमों का संचालन करना।
- वातावरण निर्माण एवं जागरूकता हेतु प्रौढ़ शिक्षा तथा अन्य सामाजिक मुद्दों के लिए मल्टी-मीडिया कार्य संचालित करना।
- साक्षरता परियोजनाओं का मूल्यांकन एवं अनुश्रवण करना।
- प्रौढ़ शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में शोध अध्ययन का आयोजन करना तथा इनके परिणामों के अनुसार भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अभिनवी परियोजनाओं का निर्माण करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सरकार द्वारा राज्य संसाधन केन्द्रों में चार विभागों की स्थापना की गयी थी–

1. पाठ्यक्रम एवं सामग्री निर्माण विभाग।
2. प्रशिक्षण विभाग।
3. शोध, मूल्यांकन एवं प्रवर्तन विभाग।
4. सामान्य गतिविधि विभाग।

उल्लेखनीय बात यह है कि साक्षरता निकेतन की संस्थापिका श्रीमती वेल्दी फिशर ने इन सभी आवश्यकताओं को पहले से ही भाँप लिया था और उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा सामग्री तैयार करने के लिए पाठ्यक्रम एवं सामग्री निर्माण विभाग तथा प्रशिक्षण विभाग की स्थापना यहाँ कर दी थी। बाद में जब राज्य संसाधन केन्द्र बना तो दोनों विभाग उसका हिस्सा बन गए।

राज्य संसाधन केन्द्र के पाठ्यक्रम एवं सामग्री निर्माण विभाग द्वारा बड़े पैमाने पर मूल साक्षरता, उत्तर साक्षरता तथा पूरक पठन-पाठन सामग्री का निर्माण एवं प्रकाशन किया गया है। इस क्रम में यहाँ समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों तथा भौगोलिक व सामाजिक स्थितियों की आवश्यकता के अनुसार अब तक 31 प्रकार की प्रवेशिकाएँ तैयार की गई हैं। ये प्रवेशिकाएँ अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाले निरक्षरों के लिए तैयार की गई थीं। जैसे- किसानों, श्रमिकों, महिलाओं चूड़ी बनाने वालों, आदिवासियों, महाकुम्भ के कल्पवासियों आदि के लिए। इसके अलावा जन शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित दीर्घकालीन प्रशिक्षणों के निरक्षर प्रतिभागियों के लिए भी कुछ प्रवेशिकाएँ तैयार की गई थीं। इनमें प्रमुख प्रशिक्षण हैं–

सिलाई, कढ़ाई, प्लम्बिंग एवं सेनेटरी वर्क, रेडियो एवं टी.वी. रिपेयरिंग, बढ़ईगीरी तथा ब्यूटीकल्चर एवं हेल्थकेयर आदि।

प्रवेशिकाओं के अतिरिक्त उत्तर साक्षरता के लिए एक विशेष पुस्तक 'एक कदम और' तैयार की गयी थी, जो साक्षर हो गए नवसाक्षरों के साक्षरता कौशल को बनाए रखने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साबित हुई। नवसाक्षरों के लिए ही एक मासिक पत्रिका 'उजाला' का प्रकाशन भी राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा सतत् रूप से सन् 2015 तक किया जाता रहा है। बाद में सरकार द्वारा अनुदान बन्द कर दिये जाने के बाद यह पत्रिका इण्डिया लिटरेसी बोर्ड द्वारा अपने संसाधनों से प्रकाशित की जाने लगी।

राज्य संसाधन केन्द्र ने समतुल्यता कार्यक्रम के अन्तर्गत नवसाक्षरों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए सेतु-साहित्य (ब्रिज कोर्स) के नाम से पुस्तकों के एक विशेष सेट का निर्माण किया, जिसे पढ़कर कोई भी नवसाक्षर कक्षा-5 का प्रमाण-पत्र प्राप्त कर सकता था। सन् 1990 में बेसिक शिक्षा परिषद, उ0प्र0 द्वारा सेतु-साहित्य के इस कोर्स को मान्यता प्रदान की गई थी। इस कोर्स में 4 पुस्तकें थीं– ज्ञान गंगा-भाषा, ज्ञान गंगा-गणित, ज्ञान गंगा-विज्ञान तथा ज्ञान गंगा-सामाजिक अध्ययन।

सेतु-साहित्य के अलावा राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा अनौपचारिक शिक्षा के बच्चों के लिए भी एक सेट तैयार किया गया था। इस सेट में भी चार पुस्तकें थीं– निकेतन भारती-प्रवेशिका, निकेतन भारती-भाषा, निकेतन भारती-गणित तथा निकेतन भारती-सामाजिक अध्ययन।

राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा नवसाक्षरों के लिए सरल, सहज एवं उपयोगी पठन-पाठन सामग्री तैयार करने के उद्देश्य से सरल लेखन प्रशिक्षण शिविरों का भी आयोजन किया जाता रहा है। इन शिविरों की श्रृंखला में कुल 44 लेखन प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जा चुके हैं, जिनमें 761 लेखक तैयार हुए, जो नवसाक्षरों तथा सीमित पठन योग्यता रखने वाले पाठकों के लिए रुचिकर तथा उपयोगी साहित्य सरल भाषा में तैयार कर रहे हैं।

राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा नव साक्षरों के लिए अब तक सरल भाषा में उनके जीवन से जुड़े विषयों पर 344 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। शोध मूल्यांकन एवं प्रवर्तन विभाग द्वारा अब तक 48 शोध अध्ययन किये जा चुके हैं तथा उनकी रिपोर्ट भी प्रकाशित की गई है। इसी प्रकार प्रशिक्षण विभाग द्वारा भी 40 से अधिक प्रशिक्षण मैनुअल तैयार किए जा चुके हैं। □

गणतंत्र दिवस समारोह

26 जनवरी, 2022 को साक्षरता निकेतन परिसर में कोविड गाइडलाइन के साथ गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया। समारोह में माननीय अध्यक्ष, इण्डिया लिटरसी बोर्ड श्री रवीन्द्र सिंह, आई.ए.एस. (से.नि.) के साथ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित इण्डिया लिटरेसी बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष एवं उ0प्र0 जल निगम के अध्यक्ष श्री जी0 पटनायक, आई.ए.एस. (से.नि.) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष महोदय ने अपने उद्‌बोधन में सभी को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि आज हमारे देश को आजाद कराने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने तथा संविधान की मूल भावना को समझने व सम्मान करने का दिन है। हमें संविधान के नियमों का पालन भी करना है। राष्ट्र के निर्माण में हमारी संस्था का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। हमें साक्षरता निकेतन की संस्थापिता श्रीमती वेल्दी फिशर के बताए हुए मार्ग पर चलना है और उनके उद्‌देश्यों को आगे बढ़ाना है।

मुख्य अतिथि श्री जी0 पटनायक जी ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय ध्वज राष्ट्र के गौरव का प्रतीक है। हमें राष्ट्रध्वज को ऊँचा बनाए रखने के लिए किसी भी प्रकार का बलिदान देने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। हमारे

संविधान में समानता के अधिकार को प्रमुखता दी गई है। इसका हमें ध्यान रखना है और पालन भी करना है।

अंत में निदेशक इण्डिया लिटरेसी बोर्ड सुश्री सन्ध्या तिवारी, आई.ए.एस. (से.नि.) ने सभी का आह्वान करते हुए कहा कि हमें संविधान के प्रावधानों को अपने जीवन में उतारना है और पालन करना है। उन्होंने माननीय अध्यक्ष महोदय तथा मुख्य अतिथि महोदय का अपना अमूल्य समय देने के लिए आभार व्यक्त किया। साथ ही जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री सौरभ खरे एवं उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं व वेल्दी फिशर चिल्ड्रेन्स अकादमी के शिक्षक/शिक्षिकाओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री राम चन्द्र यादव द्वारा किया गया। □

फूल रही है सरसों पीली

□ राम नरेश उज्ज्वल

वस्त्र पुराने छोड़-छाड़ कर नए वस्त्र में आया है।
कुदरत ने भी रंग बसंती जीवन में अपनाया है।।

नया नया हर ओर लग रहा, फैला नया उजाला है,
राग रंग में जाने किसने, कुदरत को रंग डाला है,
चित्रकार ने जैसे कोई सुन्दर चित्र बनाया है।
कुदरत ने भी रंग बसंती जीवन में अपनाया है।।

फूल रही है सरसों पीली, मस्त चली पुरवाई है,
गंध लुटाने की खातिर ये इत्र साथ में लाई है,
धीरे-धीरे सबके दिल पर इसने धाक जमाया है।
कुदरत ने भी रंग बसंती जीवन में अपनाया है।।

नए-नए पत्ते निकले ये पेड़ों की अँगड़ाई है,
हरियाली हर ओर दिख रही धरती ज्यों मुस्काई है,
थिरक रहे हैं पाँव सभी के तन-मन भी हर्षाया है।
कुदरत ने भी रंग बसंती जीवन में अपनाया है।।

कुहू-कुहू बोले कोयलिया, आम्रवृक्ष बौराए हैं,
लाल-लाल टेसू दहके ज्यों तन में आग लगाए हैं,
चंदन की खुशबू से किसने दुनिया को महकाया है।
कुदरत ने भी रंग बसंती जीवन में अपनाया है।।

सजी-धजी फुलवारी लगती स्वर्गलोक से आई है
झूम रही है मस्त मगन ज्यों मद की गोली खाई है
मोर नाचते पंख पसारे नशा सभी पर छाया है।
कुदरत ने भी रंग बसंती जीवन में अपनाया है।।

□ उज्ज्वल सदन, मुंशी खेड़ा, ट्रान्सपोर्ट नगर, एयरपोर्ट, लखनऊ-226009, मो.नं.-7071793707

बेटी की बिदाई

□ डॉ० पुष्पलता

"कल्लू की माँ, ये ले पच्चीस हजार रुपये ! भगवान ने इज्जत रख ली। पाँच रुपये सैकड़ा सुखीराम से उधार मिल गए। बहुत भला मानस है। बखत पै मदद कर दी। चिंता में रातों कु नींद बी नी आ रही थी।"

"मझै तो यकीन सा नी होरया नू कुक्कर दे दिए।"

"जमीन के कागज गिरवी धरकै आया। ओमकारी के आग्गे जिकर ना करिये।"

ओमकारी ने दरवाजे के अंदर घुसते हुए सुन लिया था, मगर वह क्या करती। उसे पता है यह जाहिर करने से दुख होगा, तो वह छिपा गई।

लच्छी मिल में मजदूर की नौकरी करता था। तीन लड़कियों और तीन लड़कों का खाना खर्चा आदि पैसे जुड़ने ही नहीं देता था। तनख्वाह कैसे गायब हो जाती थी, पता ही नहीं चलता था। जो जमा जोड़ा था, वह दो शादियों में खर्च हो गया था। गौने में ससुराल वालों के जोड़े, लड़की की दो चार चीजें, मिलाई खाने में भी बहुत खर्चा हो जाता है। लड़की के जोड़े भी देने थे। तीनों ने राहत की साँस ली। खाना खाकर आराम से सो गए थे। सुबह जाकर शहर से सामान खरीद लाएँगे। लच्छी रात की ड्यूटी पर चला गया था।

"भैस के ऊपर कपड़ा गेर दिया ?" रामरती ने ओमकारी से पूछा।

"हाँ माँ।"

"आज जाड़ा घणा है।" रजाई अच्छी तरह लपेटते हुए रामरती ने कहा। सबकी कब आँख लग गई, पता ही नहीं चला। तभी अचानक पूरे जोर से सामान गिरने की आवाज हुई। "ओमकारी देख, भैंस खुलगी दीक्खै ?"

ओमकारी नींद में उठी। उसने बाहर से आती रोशनी देखकर सोचा दिन निकल आया है। दरवाजा खोल दिया, ताकि भैंस बाहर निकल जाये। तभी मुँह पर कपड़ा लपेटे हुए तीन आदमी ओमकारी का हाथ पकड़ कर अंदर ले आए। ओमकारी की डर के मारे साँस जमने लगी।

रामरती देखने की कोशिश करने लगी तो उसकी आँखों पर टॉर्च की रोशनी लगाये रखी।

"अगर किसी ने चूँ-चपड़ की तो एक मिनट में गला काटकर ढेर कर देंगे," सुनते ही बच्चे अपनी साँस की आवाज को भी डर के मारे दबाने की कोशिश करने लगे।

"संदूक की चाबी दो।"

रामरती ने डर के मारे चाबी उनके हवाले कर दी। उन्होंने पैसा, जेवर और नए कपड़े सब बाँध लिये। रामरती के गले की मोटी हँसली और कड़ी बाँक भी उतरवा लिये। रामरती रोने लगी तो उनमें से एक ने उसके मुँह में कट्टा ठूँस दिया– "खबरदार, किसी ने आवाज निकाली तो ! हमारे जाने के बाद भी किसी की आवाज आई, तो ढेर कर देंगे।"

जाने के बाद रामरती फिर रोने लगी। पड़ोस की दीवार से दीवार मिली थी। सुनहरी जगी हुई सोच रही थी आज वे रात को क्यों जगे हैं। दीवार की मोरी से रामरती की रोने की आवाज सुनकर सुनहरी हाल चाल पूछने घर से निकल उनके दरवाजे पर आ गई। चोरों ने उसके भी हँसली, बाँक उतरवा लिए। वह वापिस भाग गई। वह भी जमीन पर बैठकर रोने लगी। सुबह सारे गाँव में खबर फैल गई, लच्छी के घर से गौने का सामान चोरों ने लूट लिया। जो भी आता, रामरती और सुनहरी रो-रो कर सब बताती। किस तरह जेवर उतरवाए, आँखों पर टॉर्च लगाए रखी। कट्टा मुँह में डाल दिया। रामरती ओमकारी को कोस रही थी, इसने दरवाजा खोला। ओमकारी सबसे बता रही थी कि उसने तो यह सोचा कि भैंस खुलकर सामान पर चढ़ गई। दिन निकल आया है, बाहर निकल जाएगी।

लच्छी रात की ड्यूटी से सुबह लौटकर आया तो सुनते ही घुटनों के बल बैठकर जमीन पर ढह गया। भीड़ किसी तरह पानी पिलाकर होश में लाई। वह रोने लगा– "जमीन गिरवी धरकर किसी तरह पीसो का जुगाड़ करा था। जमीन भी गई, पीसे भी गए, सामान भी गया," वह दहाड़ देकर रोने लगा।

रामरती चोरों को बुरी तरह कोस रही थी।

"रोओ न ! जो होग्या, सो होग्या ! इब के हो ? सबसे बड़ी बात छोरी को कुछ नी कहा।" एक बोली।

सोचकर रामरती, लच्छी और ओमकारी की रूह काँप गई। रामरती भगवान का शुक्रिया अदा करने लगी।

ससुराल वालों को चोरी की बात पता चलने पर कुछ और बात ही न खटक जाये, यह सोचकर चोरी की बात भी छिपानी पड़ी।

रामरती खाली गला, पाँव और खाली संदूक देखकर बार-बार जमीन पर बैठकर रोने लगती थी। पड़ोस की औरतों ने सबको अपने घरों से लाकर खाना खिलाया। लच्छी खाट पर अधमरा पड़ा था। सारा दिन रोते-रोते गुजरा। सारे गाँव की औरतें चोरों को गालियाँ बक रही थीं।

"बहुत बुरा करा वारों नै। उनका नाश हो जा।" समंदरी बोली।

"होगा ! देखिये, कन्या का शराप लगेगा।" पार्वती बोली।

"तुम एक काम करो। ईंट पै सिंदूर लगाकै देवी माँ के मंदिर के आग्गे पीपल में बाँध आओ। जो सामान वापिस करने से पहले ईंट गिरी तो नाश हो जागा चोरों का। चलो उठो सारे इस ईंट पै सिंदूर लगा दो।" पार्वती पास में ही पड़ी ईंट उठाकर सामने रखती हुई बोली।

ओमकारी अंदर से सिंदूर ले आई। सब घर वालों ने ईंट पर सिंदूर लगा दिया। लच्छी का लड़का और कई गाँव वाले मिलकर उसे पेड़ की शाख में बाँध आए।

"पिछाणे बी नी तन्नै ?" एक ने पूछा।

"कुक्कर पिछाणती ? आँखों पै बैटरी लगा रक्खी थी।" रामरती बोली।

"गाँव के ही होंगे और कौन होंगे।" दूसरी बोली।

"पता नी बोब्बो कौन थे। केना-केना समान जोड़ रक्खा था, अपनी जाकती खात्तर। सब लेगे।"

इब के हो ? जो होना था होग्या। जाकत बालों को देक्खो।"

जब इंसान चारों तरफ से हार जाता है, तब एक आस बचती है भगवान की। मगर लच्छी व उसके परिवार की आस भगवान के यहाँ से भी टूट गई थी। दो दिन बाद मेहमान ओमकारी को लेने आ रहे थे। घर खाली हो गया था। खाना खिलाने तक के पैसे नहीं थे। लच्छी और रामरती को लग रहा था जैसे कोई गला घोंट रहा है। पार्वती सबको जबरदस्ती खाना खिला गई थी।

पूरा दिन और रात भर रोते-रोते सब अधमरे होकर मूर्छित हो गए थे। आँख लग गई थी। मगर ओमकारी रात भर देवी माँ की मूर्ति के सामने बैठी रही। "मेरे माँ बाप की इज्जत बचाओ माँ ! या मुझे खत्म कर दो।"

सुबह के साढ़े पाँच बजे थे। भैंस बाहर निकलने को परेशान करने लगी। उसने दरवाजा खोलकर उसे बाहर निकाल दिया। घास की गठरी उठाकर कूँड में डालने चली गई। घास में खली मिलाकर

वह भैस का दूध निकालकर भीतर रख आई। तभी सामने से उसे समंदरी, पार्वती आती दिखी। वे हाथ में साड़ी और पैसे लिए थी।

उसके बाद गाँव वालों की एक के बाद एक लाइन लगी थी। कोई पाजेब, कोई गुच्छा, कोई रुपये, कोई साड़ी, कोई पैंट शर्ट, कोई शॉल, कोई चावल, कोई दाल, कोई आटा लेकर लच्छी के घर पहुँच रहे थे। "बेटी हमारी भी है, अकेले तुम्हारी नहीं है।" लच्छी को झिझकते-सकुचाते देखकर कह देते थे, "जो तेरा मौका लगेगा तो तू अपनी भतीजी के ब्याह में दे दिये। नहीं लगा तो कोई बात नी।"

दोपहर को गाँव का प्रधान भी कई लोगों के साथ दुख जताने आया था। चलते समय प्रधान ने ओमकारी के सिर पर हाथ रखा।

"नमस्ते ताऊजी।" ओमकारी बोली। अब दुख थोड़ा कम हो चला था। प्रधान ने लच्छी से कहा– "बेटी साझली हुआ करैं।" दस हजार की गड्डी देते हुए बोला– "ये रख ले, और हँसी-खुशी से मेहमानों का आगा तागा ले। वापिस करने की फिकर ना करिये। यू मेरी तरफ से कन्या के लिए है। और जरूरत होगी तो बता दिये।"

इसके बाद साथ आये सभी व्यक्तियों ने भी जेब से जो थे, निकाले। लच्छी के हाथ में रखे और ओमकारी के सिर पर हाथ रख आशीर्वाद देकर चले गए।

अब गौने से अलग जमीन छुड़ाने लायक रकम भी जमा हो गई थी। अगले दिन जब ओमकारी घास की गठरी उठाकर कूँड में डालने गई तो वहाँ एक गठरी पहले से रखी थी। उसने लालटेन ले जाकर देखा तो वही घर से चोरी हुआ सामान रखा था। साथ में पच्चीस हजार के साथ अलग से पच्चीस हजार और भी थे। एक पर्ची भी रखी थी– 'हमारी तरफ से बहन से माफी के साथ कन्यादान।' ओमकारी ने जाकर लच्छी को दिखाया।

लच्छी आँखें फैलाकर चहक उठा– "भगवान तेरा लाख लाख शुक्र है। जय हो ! भगवान तेरी जय हो।" कहता हुआ पच्चीस हजार लेकर छाती से, माथे से लगा रहा था। जैसे सब में प्राण लौट आए थे। लच्छी सबसे पहले पच्चीस हजार लेकर जमीन के कागज छुड़ा लाया। ओमकारी देवी माँ के चरणों में खुशी से धन्यवाद कर रही थी। रामरती भी धरती छूकर माथे हाथ लगा भगवान का शुक्रिया अदा कर रही थी। अब चोरों के लिए भी मन में कोई बद्दुआ नहीं थी ।

"भाई, बड़े से बड़ा चोरी का माल पाकै भी आत्मा कदी इतनी परसन्न नी हुई, जितनी आज धोरे तै भी पच्चीस हजार देकै होरी।" दारू की दुकान पर एक चोर दूसरे चोर से कह रहा था।

253ए, साउथ सिविल लाइन, मुजफ्फरनगर-251001 (उ.प्र.)

बथुआ के अद्भुत गुण

□ प्राची राय

ठंड के मौसम में बथुआ का साग खूब होता है। बथुआ बहुत ही लाभदायक होता है।

साग और रायता बना कर बथुआ आदि काल से खाया जाता रहा है। विश्व की सबसे पुरानी महल बनाने की पुस्तक शिल्प शास्त्र में लिखा है कि हमारे बुजुर्ग अपने घरों को हरा करने के लिए प्लाटर में बथुआ मिलाते थे और हमारी माताएँ सिर से ढेरे व फाँस (रूसी) साफ करने के लिए बथुए के पानी से बाल धोया करती थी। आइए बथुए की कुछ विशेषताओं के बारे में जानें–

- बथुआ विटामिन बी-1, बी-2, बी-3, बी-5, बी-6, बी-9 और विटामिन-सी से भरपूर है। इसमें कैल्शियम, लोहा, मैग्नीशियम, मैगनीज, फास्फोरस, पोटैशियम, सोडियम व जिंक आदि मिनरल्स होते हैं। 100 ग्राम कच्चे बथुए यानि पत्तों में 7.3 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 4.2 ग्राम प्रोटीन व 4 ग्राम पोषक रेशे होते हैं।
- जब बथुआ मट्ठा, लस्सी या दही में मिला दिया जाता है, तो यह किसी भी मांसाहार से ज्यादा प्रोटीन वाला व किसी भी अन्य खाद्य पदार्थ से ज्यादा सुपाच्य व पौष्टिक आहार बन जाता है। साथ में बाजरे या मक्के की रोटी, मक्खन व गुड़ हो तो इसे खाने के लिए देवता भी तरसते हैं।

- जब हम बीमार होते हैं तो डॉक्टर विटामिन की गोली खाने की सलाह देते हैं। गर्भवती महिला को खासतौर पर विटामिन बी, सी व आयरन की गोली बताई जाती है। बथुए में ये सब कुछ है। कहने का मतलब है कि बथुआ पहलवानों से लेकर गर्भवती महिलाओं तक, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, सबके लिए अमृत समान है।
- यह साग प्रतिदिन खाने से गुर्दों में पथरी नहीं होती। बथुआ आमाशय को बलवान बनाता है। गर्मी से बढ़े हुए यकृत को ठीक करता है। बथुए के साग का सही मात्रा में सेवन किया जाए तो निरोग रहने के लिए सबसे उत्तम औषधि है।
- बथुए का सेवन कम से कम मसाले डालकर करें। नमक न मिलाएँ तो अच्छा है, यदि स्वाद के लिए मिलाना पड़े तो सेंधा या काला नमक मिलाएँ और देशी गाय के घी से छौंक लगाएँ। बथुए का उबाला हुआ पानी अच्छा लगता है। दही में बनाया हुआ रायता स्वादिष्ट होता है। किसी भी तरह बथुआ नित्य सेवन करें। बथुए में जिंक होता है, जो सर्दी और बदलते मौसम की मार से बचाता है।
- बथुआ कब्ज दूर करता है। अगर पेट साफ रहेगा तो कोई भी बीमारी शरीर में लगेगी ही नहीं। ताकत और स्फूर्ति बनी रहेगी।
- कहने का मतलब है कि जब तक इस मौसम में बथुए का साग मिलता रहे, नित्य इसकी सब्जी खाएँ। बथुए का रस, उबाला हुआ पानी पीएँ। यह खराब लीवर को भी ठीक कर देता है।
- पथरी हो तो एक गिलास कच्चे बथुए के रस में शकर मिलाकर नित्य पिएँ। इससे पथरी टूटकर बाहर निकल आएगी।
- मासिक धर्म रुका हुआ हो तो दो चम्मच बथुए के बीज एक गिलास पानी में उबालें। आधा रहने पर छानकर पी जाएँ। मासिक धर्म खुलकर आ आएगा। आँखों में सूजन, लाली हो तो प्रतिदिन बथुए की सब्जी खाएँ।
- पेशाब के रोगी बथुए को उबालकर उसका पानी पिएँ। स्वाद के लिए नींबू जीरा, जरा सी काली मिर्च और काला नमक मिला सकते हैं।

□ शिवालिक गेस्ट हाउस, मालवीय कुंज लंका, वाराणसी
मो.नं.-9450720568

मन्नू का मन

□ मीरा जैन

इस कड़कड़ाती ठंड में आज भी मन्नू को कुत्ते के पिल्ले के साथ दौड़-दौड़ कर खेलते देख सेठ जी ने लगातार डाँटते हुए कहा– "क्यों रे मन्नू ! कल तक तो तू कहा करता था कि स्वेटर नहीं है। गर्मी लाने के लिए रोज इस पिल्ले के साथ दौड़ता हूँ। आज मैंने इतना शानदार स्वेटर तुझे लाकर दिया। फिर भी इस पिल्ले के साथ रोज की तरह ही दौड़ रहा है। मात्र एक स्वेटर के लिए तुझे झूठ बोलते शर्म नहीं आई ?"

इस पर गरीब मन्नू ने जवाब दिया– "अंकल जी ! वास्तव में ठंड से बचने के लिए ही कई दिनों से मैं इस पिल्ले के साथ दौड़ता था। आज मैं स्वेटर पहन कर आराम से घर के अन्दर ही बैठा था। तभी रोज के टाइम पर यह पिल्ला दरवाजे पर आकर कूँ-कूँ करने लगा साथ खेलने के लिए। मैंने इसे मारकर भगाना चाहा, लेकिन यह टस से मस नहीं हुआ। इस पर माँ ने कहा। बेटा ! जब तुझे इसकी जरूरत थी, खुद उसके साथ दौड़ने चला जाता था। आज वह खेलने की इच्छा लिए आया तो तू इसे मार कर भगा रहा है। जो इंसान अपना काम निकल जाने पर सामने वाले को पहचाने तक नहीं, उसका जीवन जानवरों से भी बदतर है।

अंकल जी, यदि आप कहें तो मैं आपका स्वेटर वापिस कर दूँगा।"

मन्नू की दलील सुन सेठ जी की आँखें झुक गयीं। उन्हें महसूस हुआ कि मन्नू का आचरण उनके धन से कहीं ज्यादा भारी है।

□ 516, साँईनाथ कॉलोनी, सेठी नगर, उज्जैन।
मो.नं.-94425918116

आने लगा बसंत

□ गोविन्द भारद्वाज

धीरे-धीरे चुपके-चुपके,
आने लगा बसंत।
दूर-दूर तक भैया देखो,
छाने लगा बसंत।

फूल रही है सरसों प्यारी,
खेत-खलिहानों में।
हरी दूब पर टहल रही है
ओस मैदानों में।

फूलों की क्यारी-क्यारी में,
गाने लगा बसंत।
धीरे-धीरे चुपके-चुपके,
आने लगा बसंत।

चंपा-चमेली और गुलाब,
खिल रहे उपवन में।
तितली-भौंरे रंग-बिरंगे,
उड़ चले मधुबन में।

गेहूँ की बालियाँ भी करें,
खूब अनोखे खेल।
घर-आँगन में चढ़ती जाए,
लम्बी-लम्बी बेल।

बूढ़ी आँखों को भी देखो,
भाने लगा बसंत।
धीरे-धीरे चुपके-चुपके,
आने लगा बसंत।

पेड़ों के पत्तों पर बैठी,
भोली-भाली धूप।
पाँव पसारे धरती पर तो,
चमका सबका रूप।

□ पितृकृपा, 4/254, बी-ब्लॉक, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, पंचशील, अजमेर-305004 (राज.)
मो.नं.-9461020491

फटी एड़ियाँ

□ सुरेश सौरभ

बाजार से किताबों का गट्ठर लाया। उसे बैठक में रख जैसे ही सुस्ताने के लिए कुर्सी पर वह पसरा, पत्नी ने उसकी एड़ी देखकर हैरत से कहा– "कितनी बार आपकी ऐड़ियों में क्रीम लगाया, पर यह तो फटती ही रहती हैं। दर्द नहीं होता क्या आपको ?"

"होता है, पर क्या करें ?"

"इसीलिए कहती हूँ कि हमेशा जूते पहना करें। पर आप मेरी सुनते कहाँ हैं। जब देखो, तब चप्पलें ही पहन कर निकल लेते हैं।" पत्नी कुढ़ कर बोली।

"दरअसल मेरे पिता जी एक गरीब मजदूर थे। बड़ी मुश्किल से वह अपनी चप्पलें ही खरीद पाते थे।"

"आप तो गरीब नहीं हैं, आप तो सरकारी अध्यापक हैं।" पत्नी ने मुँह फेर कर कहा।

"तुम जानती हो, मैं कभी-कभी जूते भी पहन लेता हूँ। पर यह ऐड़ियाँ फटना बंद नहीं होती। लगता है, यह दर्द मुझे विरासत में मिला है। यह दर्द महसूसते हुए, गरीबों मजदूरों के दर्द का आभास करता रहूँ, शायद इसीलिए यह दर्द नहीं जाता। शायद ईश्वर की यही इच्छा है।"

अब पत्नी पति के करीब आई। पति की आँखों में झाँकने लगी, जहाँ कोई नमी तैर रही थी। अब वही नमी धीमे-धीमे पत्नी की आँखों में भी तैरने लगी। पत्नी ने भरे गले से कहा– "तुम्हारा यह शायद बड़ा प्यारा लगता है। और बहुत तकलीफ भी दिल को देता है।"

अब पत्नी उन पुस्तकों को ताक रही थी, जिसे गरीब बच्चों को निःशुल्क देने के लिए उसके पति अपने पैसे से बाजार से खरीद कर लाए थे।

पति ने किताबों का वह गट्ठर उठाया। चप्पलें पहनीं और चल पड़ा। पत्नी उसे खाने का टिफिन पकड़ाते हुए उसकी फटी ऐड़ियों की तरफ देखकर बोली– "काश यह दर्द हर आदमी को मिलता !"

□ निर्मल नगर, लखीमपुर-खीरी-262701
मो.नं.-7376236066

बनाएँ शाकाहारी आमलेट

□ शताब्दी गरिमा

प्रायः आमलेट का नाम सुनते ही अण्डे की तस्वीर सामने आ जाती है, जिसे शाकाहारी लोग खाना पसन्द नहीं करते। आज यहाँ आमलेट बनाने की एक ऐसी विधि दी जा रही है, जिसे मांसाहारी और शाकाहारी सभी लोग शौक से और चाव से खा सकते हैं।

आवश्यक सामग्री : साबुत सोयाबीन- 2 कप, प्याज बड़ा- 1, हरी मिर्च- पसंद के अनुसार, साबुत जीरा- एक चम्मच, हरी धनिया- एक गुच्छी, घी, मक्खन अथवा तेल- जरूरत के अनुसार, नमक- स्वाद के अनुसार।

बनाने की विधि : सोयाबीन के दानों को 12 घण्टे के लिए पानी में भिगो दें। भीगे हुए दानों को अच्छी तरह धोकर मिक्सी में अथवा सिलबट्टे पर पीस लें। पीसते समय थोड़ा सा पानी भी मिला लें, ताकि पेस्ट थोड़ा गीला रहे। प्याज, हरी मिर्च और धनिया को बारीक काट लें। इन सबको पिसे हुए पेस्ट में मिला दें। साथ ही जीरा और नमक भी मिला लें। मिश्रण को अच्छी तरह फेंट कर 20 मिनट के लिए ढक कर रख दें।

फ्राईपैन अथवा नॉनस्टिक तवे को आँच पर चढ़ाएँ, उस पर जरूरत के अनुसार घी, तेल अथवा मक्खन डालें। गरम हो जाने पर उसके ऊपर एक बड़ा चम्मच सोयाबीन का मिश्रण डालकर फैला दें और धीमी आँच पर उसे पकने दें।

जब नीचे का हिस्सा पक कर सुनहरा हो जाए, तो आराम से पलट दें। इस तरह दोनों तरफ से सुनहरा होने तक पका लें। बस प्रोटीन से भरपूर स्वादिष्ट और पौष्टिक शाकाहारी आमलेट तैयार है। इसे नाश्ते में चटनी अथवा चाय के साथ खाएँ और खिलाएँ।

□ ए-13, प्रतापनगर, विजय नगर, लखनऊ-226023
मो.नं.-7505598879

एक नदी बहती थी

□ डॉ० राजीव गुप्ता

एक नदी बहती थी कल-कल, न जाने अब कहाँ गई।
किस्सा है न कोई कहानी, बात है बिलकुल सही-सही।।

न जाने कितने दुश्मन हैं एक नदी के जीवन के,
न जाने कितने मैले हैं लोग यहाँ पापी मन के।
पुण्य कमाने आते हैं और पाप इसे दे जाते हैं
सब लोभी हैं, पाखंडी हैं, सेवक हैं काले धन के।

आज नदी हर मुरझाई है, उनकी गरिमा कहाँ गई।
किस्सा है न कोई कहानी, बात है बिलकुल सही-सही।।

नदियों का पानी अमृत था, अब तो यह विष काला है,
खोल गटर का मुँह शहरों का, इसमें ही तो डाला है।
कहने को इंसान हैं हम पर पशुओं से भी बदतर हैं,
अपना तो हर काम है ओछा, भद्दा और निराला है।

सिमट रही है अपने में ही शोर-मचाती नहीं रही।
किस्सा है न कोई कहानी, बात है बिलकुल सही-सही।।

जिस दिन नदियों के गौरव को वापस तुम लौटाओगे,
खुशियाँ तुम भी झोली भर-भर इनसे वापस पाओगे।
सोचो जब इनका पानी सचमुच अमृत हो जाएगा,
अँजुरी में फिर अमृत भर तुम अपनी प्यास बुझाओगे।

फिर से नदियों को जीवन दो, दे दो साँसें नई-नई।
किस्सा है न कोई कहानी, बात है बिलकुल सही-सही।।

□ 5/11, बाग कूँचा फर्रुखाबाद-209625 (उ.प्र.), मो.नं.-6388563424

फूलों वाला मोहल्ला

□ गिरीश पंकज

गीतिका के माता-पिता जब सुबह घूमने जाते हैं, तो दूसरों के बगीचे के खिले कुछ फूल तोड़ कर ले आते हैं। फिर उसे भगवान को चढ़ाते हैं। गीतिका को बहुत बुरा लगता था। वह सोचती, क्या भगवान चोरी के फूलों को भी स्वीकार करते हैं ? कभी नहीं। भगवान को इस बात का दुख होता होगा कि लोग उनकी पूजा के लिए चोरी के फूल चुन कर लाते हैं। चोरी करना तो बुरी बात है न !

एक दिन जब गीतिका के माता-पिता सुबह घूमकर लौटे, तो वे आपस में चर्चा कर रहे थे। माँ सुमन बोल रही थी– "देखो, कितने गंदे लोग हैं। हम पूजा के लिए दो फूल क्या तोड़ते हैं, लोग हमसे झगड़ने आ जाते हैं।"

पिता संतोष कुमार भी बोले– "सच में, हद है। दो-चार फूल तोड़ लेने से क्या उनके पेड़ नष्ट हो जाएँगे ? आखिर हम लोग इन फूलों का कोई धंधा तो करते नहीं। भगवान को ही चढ़ाते हैं। अरे, भगवान को फूल चढ़ाएँगे तो कुछ पुण्य उनको भी तो मिलेगा।"

गीतिका उनकी बातें सुन रही थी। उससे रहा नहीं गया। छोटा मुँह बड़ी बात हो जाएगी, फिर भी उसने कहा– "आप लोग किसी के बगीचे में खिले हुए फूल तोड़ते ही क्यों हैं। क्या भगवान को फूल

चढ़ाना बहुत जरूरी होता है ? क्या उनके सामने केवल हाथ जोड़कर खड़े होने पर वे नाराज हो जाएँगे ? क्या वे सोचेंगे कि देखो, उनका भक्त उन पर फूल नहीं चढ़ाता ? मेरे ख्याल से तो भगवान कभी ऐसा नहीं सोच सकते। मैंने तो सुना है कि भगवान सच्चे भाव के भूखे होते हैं।"

गीतिका की बात सुनकर उसकी माँ हँस पड़ी और बोली– "तू तो बहुत समझदार हो गई है। छठी क्लास में पढ़ती है, लेकिन कॉलेज में पढ़ने वाले बच्चों जैसी बातें कर रही है। तेरी बात बिल्कुल सही है। लेकिन फूल चढ़ाने से लगता है कि हम लोग पूजा कर रहे हैं।"

गीतिका ने कहा– "अगर फूल चढ़ाने का इतना ही शौक है, तो क्यों नहीं हम लोग अपने घर के बाहर की खाली पड़ी जमीन का उपयोग कर लेते हैं। वहाँ कुछ सुंदर-सुंदर फूल उगा लें। गेंदा, बेला, चंपा और चमेली। तरह-तरह के तो फूल हैं।"

संतोष कुमार बोले– "बात तो तू बिल्कुल सही कह रही है। लेकिन बेटी, इसके लिए बड़ी मेहनत की जरूरत पड़ती है। नर्सरी से पौधे लाकर लगाना तो आसान है, लेकिन उनकी देखभाल कठिन है। रोज सुबह उठ कर उनको पानी दो। मिट्टी को उपजाऊ बनाए रखने के लिए उसमें गोबर-खाद डालते रहो। इतनी मेहनत कौन करे। इससे अच्छा है किसी के घर में जो फूल लगे हैं, उन्हें तोड़ लो।"

गीतिका बोली– "यही तो गलत बात है। आप जब अपने आँगन में खिले फूल को भगवान पर चढ़ाएँगे तो आपको बहुत खुशी मिलेगी। यह भी तो सोचिए। भगवान भी खुश हो जाएँगे कि ये लोग हमारे सच्चे भक्त हैं। एक बार ऐसा करके तो देखिए, प्लीज।"

गीतिका की बात सुनकर पिता हँस पड़े और बोले– "तू बहुत सही बात कह रही है। अब हम अपने घर के सामने अच्छा बगीचा लगाएँगे। लेकिन एक शर्त है। इसमें तुझे भी हमारा साथ देना होगा। तू सुबह उठकर पौधों को पानी देगी। मंजूर ?"

गीतिका खुश होकर बोली– "यह तो बड़ी अच्छी बात है। मैं एकदम तैयार हूँ। इसी बहाने सुबह जल्दी उठा करूँगी। बहुत दिनों से सोचती थी कि अपने घर के बाहर भी हम लोग एक सुंदर बगीचा बनाते। अब यह सपना पूरा हो रहा है। मैं रोज पौधों को पानी दिया करूँगी।"

गीतिका की बात सुनकर माता-पिता ने तय किया कि अब एक बगीचा लगा ही लेना चाहिए। यह सोचकर दोनों नर्सरी गए और वहाँ से तरह-तरह के फूलों वाले पौधे लेकर आ गए। कुछ जमीन में लगाए, तो कुछ गमलों में। उसके बाद रोज सुबह-शाम

पौधों को पानी देने का काम शुरू हुआ। इस काम में सबसे आगे रहती थी गीतिका। वह सुबह जल्दी उठ जाती और घूम-घूम कर पाइप के सहारे हर पौधे को सींचती। उनसे बातें भी करती, कहती– "मेरे प्यारे पौधे, तुम जल्दी बड़े हो जाओ और सुंदर-सुंदर फूल खिलाओ। सारे घर को महकाओ !"

पौधों से गीतिका का बतियाना माता-पिता को बड़ा अच्छा लगता। कुछ महीने और बीते, फिर पौधों में फूल खिलने लगे। नन्हीं-नन्हीं कलियों को देखकर गीतिका बड़ी खुश हुई। एक दिन उसने माँ को आवाज दी– "माँ ! देखो तो आकर। ये फूल खिलने वाले हैं। छोटी-छोटी कलियाँ नजर आ रही हैं।"

माँ दौड़ कर आई और खुश हो कर बोली– "सचमुच, कितना अच्छा लग रहा है। अब ये कलियाँ फूल बनेंगी और उनकी सुंदरता से अपना यह बगीचा भी देखने लायक हो जाएगा।"

"हाँ माँ ! यही तो मैं चाहती थी। पड़ोस में कुछ घरों में भी लोगों ने बगीचा लगाया हुआ है। छतों पर गमले भी लगाए हैं। फिर हमारे पास तो कितनी जमीन है। अब इसका सही उपयोग हुआ है।"

बात चल रही थी, तब तक गीतिका के पिता भी बाहर आ गए। उन्होंने एक नजर चारों तरफ डाली और बोले– "वाह ! अब तो पौधों में फूल भी दिखने लगे। जब सारे फूल खिल जाएँगे, तो अपना घर भी सुंदर दिखाई देने लगेगा।"

गीतिका मुस्कराते हुए बोली– "तब आपको बाहर से किसी के घर से फूल तोड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी। न किसी से दो बातें ही सुननी पड़ेंगी।"

संतोष कुमार बोले– "तूने बहुत सही कहा, बेटी। यह हमारी भूल थी कि हमने बगीचा लगाने पर ध्यान नहीं दिया और दूसरे के घर के फूलों को तोड़कर भगवान पर चढ़ाते रहे। अब तो हम अपने आँगन के फूलों को तोड़कर भगवान को चढ़ाया करेंगे।"

"तब देखना, भगवान खुश होकर हमको आशीर्वाद देंगे।"

इतना बोल कर गीतिका स्कूल जाने की तैयारी करने भीतर चली गई।

कुछ दिन बाद गीतिका का घर तरह-तरह के फूलों से महक उठा। आस-पास के लोग जब घर आते तो कहते– "वाह शर्मा जी ! आप लोगों ने तो बहुत सुंदर बगीचा बना लिया।"

गीतिका सबसे कहती– "आप लोग भी ऐसा करें न ! तब हमारा मोहल्ला फूलों वाला मोहल्ला बन जाएगा।"

गीतिका की बात सबको जम गई। और आस-पास के सभी लोगों ने अपने-अपने घरों में बगीचा लगाना शुरू कर दिया। जिनके पास आँगन नहीं था, उन्होंने अपनी छतों पर गमलों में फूल उगा लिए। देखते-ही-देखते आस-पास के हर घर में फूल-ही-फूल नजर आने लगे।

गीतिका बोली– "अब हमारा मोहल्ला सचमुच फूलों वाला मोहल्ला हो गया।" फिर इस मोहल्ले के बारे में एक दिन अखबार में खबर भी छप गई। कुछ दिनों के बाद गीतिका के माता-पिता को पर्यावरण के लिए काम करने वाली संस्था 'ग्रीन वेली' ने बुलाकर सम्मानित भी किया।

सम्मान पाकर लौटने के बाद गीतिका को अपने पास बुला कर उसके माता-पिता ने उसके हाथों में सम्मान-पत्र रख दिया। फिर माँ बोली– "सम्मान की असली हकदार तो तू है, बेटी ! तेरे कारण ही हमने अपने घर को सुंदर बगीचे में बदल दिया। अब हमें कहीं और जाकर फूल तोड़ने, और किसी की दो बातें सुनने की जरूरत नहीं। अपने आँगन में ही अब तरह-तरह के फूल खिल रहे हैं।"

माँ की बात सुनकर गीतिका हँस पड़ी और बाहर खेलने चली गई।

□ सेक्टर-3, एच.आई.जी.-2/2, हाउस नं.-2, दीनदयाल उपाध्याय नगर, रायपुर-492010
मो.नं. : 9425212720, 8770969574

मनमोहक ऋतु

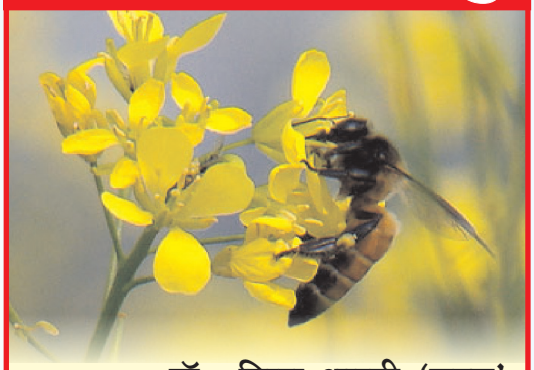

□ डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल'

कोमल कलियाँ-फूल निराले,
भौंरे लगते हैं मतवाले।

तितली भी उड़-उड़कर आती,
अपने सुन्दर पंख हिलाती।

गरमी की दी झलक दिखाई,
जाड़े की हो रही विदाई।

धरती पर छायी हरियाली,
तरु-शिखरों पर है कुछ लाली।

कोयल ने मीठा गाया है,
सबके मन को हरषाया है।

खेतों में सरसों फूली है,
अनगिन हरी मटर झूली है।

बागों में महकी अमराई,
मनमोहक ऋतु है सुखदाई।

□ सिद्धायन, भैरवाँ, चम्पावत-262523 (उत्तराखण्ड)
मो.नं.-9411347934

हमारा प्यारा रेडियो

□ डॉ० अलका जैन 'आराधना'

दादाजी के हाथ में एक काले रंग का बॉक्स देखकर मोनू को बहुत उत्सुकता हुई। उसने देखा, दादाजी एक बटन को बार-बार घुमाए जा रहे थे। फिर उसमें एक गाना बजने लगा। मोनू ने पूछा– "दादाजी ! ये क्या है ?"

दादाजी ने जवाब दिया– "ये रेडियो है। आजकल जो रेडियो गाड़ी और मोबाइल में चलाए जाते हैं, ये उनसे अलग है।"

मोनू बड़े ध्यान से दादाजी की बात सुन रहा था। उसने कहा– "आपने इसे कब से सँभाल रखा है ? आज तो तकनीक बहुत विकसित हो गई है ?"

दादाजी ने मुस्कुराते हुए कहा– "ये रेडियो तब से मेरे पास है, जब मैं तुम्हारे जितना था। उस समय किसी के पास रेडियो होना बहुत बड़ी बात मानी जाती थी। देश-दुनिया की खबरें और गाने सुनने का जो आनंद उस समय आता था, वह अब तकनीक के बढ़ते प्रयोग के बावजूद नहीं आता।"

मोनू ने आश्चर्य से पूछा– "ऐसा क्यों दादाजी ?"

दादाजी ने जवाब दिया– "क्योंकि पहले मनोरंजन के साधन सीमित थे। आज इनकी भरमार है। सारी दुनिया मोबाइल के

रूप में मुट्ठी में समा गई है, लेकिन वो मजा अब नहीं आता। पहले दूर-दराज के दुर्गम क्षेत्रों में भी रेडियो के माध्यम से जरूरी समाचार और सूचनाएँ पहुँचाई जाती थी।"

मोनू ने दादाजी के पास बैठते हुए कहा– "लेकिन आज आपको रेडियो की याद कैसे आ गई ?"

दादाजी मुस्कुराते हुए बोले– "आज अखबार में रेडियो दिवस के बारे में पढ़ा, तो पुरानी यादें ताजा हो गईं।"

उसने पूछा– "तो दादाजी ! रेडियो दिवस के बारे में और भी कुछ बताइए ?"

दादाजी ने बताया– "बेटा, 13 फरवरी को 'विश्व रेडियो दिवस' मनाया जाता है। इसे मनाने के लिए हर साल नई थीम रखी जाती है। रेडियो दिवस मनाए जाने के लिए स्पेन रेडियो अकैडमी ने 2010 में पहली बार प्रस्ताव रखा था। वर्ष 2011 में यूनेस्को के सदस्य राज्यों द्वारा 13 फरवरी को रेडियो दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई। 2012 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा इसे अपनाया गया था। पहला रेडियो दिवस 13 फरवरी, 2012 को मनाया गया।"

मोनू ने फिर पूछा– "दादाजी ! रेडियो दिवस क्यों मनाया जाता है, जबकि आज तो संचार के एक से बढ़कर एक साधन हैं।"

दादाजी मुस्कुराते हुए बोले– "हाँ यह सही है कि रेडियो संचार का सबसे पुराना साधन है, लेकिन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सार्वजनिक बहस और शिक्षा के प्रसार में रेडियो का आज भी बहुत महत्त्व है। मनोरंजन की दृष्टि से भी रेडियो का महत्त्व कम नहीं हुआ है। आपात समय में जब संचार के अन्य माध्यम ठप हो जाएँ तो प्रभावितों की मदद भी की जा सकती है।"

मोनू ने एक और जिज्ञासा दादाजी के सामने रखी– "भारत में रेडियो की शुरुआत कब हुई थी ?"

दादाजी ने बताया– "देश में रेडियो प्रसारण की शुरुआत वर्ष 1923 में हुई थी। वर्ष 1936 में भारत में सरकारी 'इम्पीरियल रेडियो ऑफ इंडिया' की शुरुआत हुई थी। आजादी के बाद इसे आकाशवाणी यानि ऑल इंडिया रेडियो के नाम से जाना गया।"

मोनू ने चहकते हुए कहा– "दादाजी, रेडियो से जुड़ी कुछ जानकारियाँ मेरे पास भी हैं।"

दादाजी ने उत्सुकता से पूछा– "बताओ बेटा। मुझे अच्छा लगेगा सुनकर।"

मोनू ने जवाब दिया– "रेडियो के विकास में भारतीय वैज्ञानिक डॉ0 जगदीश चन्द्र बसु का भी योगदान रहा है। वे पहले वैज्ञानिक थे, जिन्होंने रेडियो और सूक्ष्म तरंगों पर कार्य किया था। एक बात और दादाजी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने नवंबर, 1941 में रेडियो पर जर्मनी से भारतवासियों को संबोधित किया था। आजादी की लड़ाई में उनका यह कदम बहुत महत्त्वपूर्ण था।"

दादाजी मोनू की पीठ थपथपाते हुए बोले– "वाह बेटा, बहुत अच्छी जानकारी दी है तुमने।"

तभी रेडियो पर एक पुराना गाना बजने लगा। दादाजी मुस्कुराते हुए अपना पसंदीदा गाना सुनने लगे।

□ एफ-1, उत्सव रेजीडेंसी प्लॉट नं.-118-119, गायत्री नगर बी. महारानी फार्म, दुर्गापुर, जयपुर-302018
मो.नं.-9828037056

आँवला बहुत ही गुणकारी

□ लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

आँवला फल अमृत सम, होता गुणकारी,
आँवले का मुरब्बा व चटनी पंसद हमारी।
विटामिन सी हमें मिले, आँवले में पर्याप्त,
विज्ञान भी मानता, आँवले को लाभकारी।

दादा जी कहते , आँवले में खनिज भरपूर,
आँवले के प्रयोग से, रोग भगें कोसों दूर।
एंटीऑक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में, इसमें मिले,
अच्छा कोलेस्ट्रॉल बनने को, करे मजबूर।

इसके सेवन से, जोड़ों के दर्द में हो आराम,
प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने का, करता ये काम।
अल्सर, कोलाइटिस, पेट का संक्रमण खत्म,
आँवला फल का होता, बहुआयामी काम।

आँवले के कई फायदे, मेरे दादा बताते हैं,
जाड़े के मौसम में, दादा रोज घर लाते हैं।
मेरे दादा रोज आँवले का, च्वयनप्रास खाते,
आँवले के कई लाभ, अँगुली पर गिनाते हैं।

मुझे आँवले की कैंडी खाना खूब अच्छा लगता,
दादा ले आते, जब मैं कैंडी खाने को कहता।
मम्मी की पसंद है, आँवले का मुरब्बा, अचार,
सच में आँवला बहुत ही गुणकारी दिखता।

□ ग्राम-कैतहा, पोस्ट-भवानीपुर, बस्ती-272124 (उ.प्र.), **मो.नं.**-7355309428

सही राह

□ अलका प्रमोद

कमला मौसी अपनी नौकरी से रिटायर हो गयी थीं। वह अपने घर मकदूमपुर गाँव में आ कर रहने लगीं। मौसी अकेली थीं, अतः प्रायः ही अपने घर के बाहर बैठ जातीं। बड़े, बच्चे सब उनको मौसी ही कहते थे। मौसी अपना समय बिताने के लिये रोज शाम को बच्चों को इकट्ठा करके कहानी सुनाती थीं। उनकी कहानियाँ बहुत मजेदार होतीं थीं। इसीलिये बच्चे प्रतीक्षा करते थे, कि कब शाम हो और वह मौसी से कहानी सुनें।

राजू को मौसी की कहानी सुनने में तो मजा आता था, पर मौसी की एक बात उसे बिल्कुल नहीं पसंद थी। मौसी रोज कहानी सुनाने से पहले बच्चों से कुछ न कुछ प्रश्न पूछती थीं। और जो बच्चा सही उत्तर देता, उसे वह टाफी देती थीं। कभी वह कृष्ण-राम के बारे में पूछतीं, तो कभी किसी देश की राजधानी, तो कभी प्रदेश की नदियों के नाम। राजू को पढ़ना बिल्कुल पसंद नहीं था, इसीलिये उसे कभी टाफी नहीं मिलती थी। यहाँ तक तो ठीक था, पर वह सबके सामने उसका नाम लेकर कह भी देतीं– "राजू तुम भी बताओ।"

उस दिन जब सब बच्चे एकत्र हो गये तो मौसी ने पूछा– "हमारे देश के सबसे पहले प्रधानमंत्री कौन थे ?"

यह तो राजू को पता था। वह बोलने चला, पर उससे पहले ही मानू बोल पड़ा– पंडित जवाहरलाल नेहरू।"

मौसी ने उसे टाफी दी और बोलीं– "अब राजू बताएगा। हमारे देश के सबसे पहले राष्ट्रपति कौन थे ?"

यह तो राजू को नहीं याद था। वह नीचे देखने लगा। तभी मानू बोला– "मौसी हम बताएँ ?"

मौसी ने कहा– "हाँ बताओ।"

मानू बोला– "श्री राजेन्द्र प्रसाद।"

मौसी ने कहा– "शाबाश मानू।"

मौसी ने उसे एक और टाफी दी। उसके बाद कहानी सुनाने लगीं। राजू का

मूड खराब हो गया। मानू को दो-दो टाफी मिली तो कोई बात नहीं, पर राजू को सबके सामने नीचा देखना पड़ा। यह उसे बुरा लग गया। मौसी उससे सदा जान-बूझ कर कठिन प्रश्न पूछती हैं। उसने सोच लिया कि वह कहानी सुनने नहीं आया करेगा।

जब शाम को उसके सारे दोस्त कहानी सुनते तो वह अकेला पड़ जाता। उसे समझ न आता कि किसके साथ खेले। अब मौसी उसे बुरी लगने लगीं। उन्हीं के कारण वह अकेला पड़ गया था।

मौसी ने अपने घर के बाहर साग सब्जी लगा रखी थी। एक दिन मौसी कहीं गयी हुई थीं। राजू उधर से निकला तो उसको शैतानी सूझी, उसने उनके घर का गेट खोल दिया, जिससे एक बकरी उनके घर में घुस कर लॉन में लगी सब्जी खा गई। मौसी लौटीं तो देखा कि उनकी बगिया तहस-नहस हो चुकी है। वह दुखी हो गयीं। उनको दुखी देख कर राजू मन ही मन प्रसन्न हो गया। अब, जब भी वह बाहर जातीं, राजू उनको परेशान करने के लिए कुछ न कुछ शैतानी करता रहता था। कभी उनके पिछवाड़े लगे पेड़ के अमरूद तोड़ लेता, तो कभी उनके घर की खिड़की पर पत्थर मार देता। मौसी लौटतीं तो समझ न पातीं कि कौन यह सब करता है।

मौसी एक दिन बाहर के दरवाजे पर ताला लगा कर बाहर गई। राजू तो इस मौके की तलाश में रहता ही था। उसने देखा, एक गाय घूम रही है। बस फिर क्या था, उसने मौसी के घर का गेट खोल दिया। कुछ देर में गाय गेट खुला देख कर अन्दर चली आई। पर आज जैसे ही गाय बगिया की ओर बढ़ी, मौसी पिछवाड़े से डंडा लेकर आ धमकीं। गाय बाहर की ओर भागी। बाहर राजू देखने के लिये खड़ा था कि कैसे गाय मौसी की बगिया बिगाड़ती है। इससे पहले कि वह सँभलता, गाय ने उसे सींग मार कर गिरा दिया। यह देख कर मौसी दौड़ कर बाहर आईं। राजू बेहोश हो गया था। मौसी ने तुरंत मोबाइल करके डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर राजू को होश में लाये, उसको दवा दी और मरहम-पट्टी की।

होश में आने पर उसने देखा कि वह मौसी के कमरे में लेटा है। सामने मौसी और डॉक्टर खड़े हैं। उसे एक बात समझ में नहीं आ रही थी कि मौसी तो बाहर गईं थीं। फिर वह अन्दर से कैसे आ गईं। राजू बोला– "मौसी, आप तो बाहर गईं थीं, फिर घर के पीछे से कैसे आ गईं ?"

मौसी ने कहा– "मैंने सोच लिया था कि आज मैं पता करके रहूँगी कि कौन मेरा नुकसान कर रहा है। इसीलिये मैंने पीछे का दरवाजा खुला छोड़ दिया। मैं बाहर से तालाब लगा कर कुछ दूर गई। फिर पीछे से आ कर घर के अन्दर छिप कर बैठ गई।

मुझे क्या पता था कि यह सब तुम कर रहे हो।"

राजू बहुत लज्जित हुआ। उसने कान पकड़ कर कहा– "सॉरी मौसी।"

मौसी ने पूछा– "पर बेटा, तुम ऐसा क्यों करते थे ?"

राजू ने कहा– "आप मुझसे प्रश्न पूछती थीं और मैं नहीं बता पाता था तो मेरा सबके सामने मजाक बनता था।"

मौसी ने कहा– "बेटा, मैं तो इसीलिये प्रश्न पूछती हूँ कि तुम लोगों का सामान्य ज्ञान बढ़े। पर तुम्हें बुरा लगता है तो नहीं पूछूँगी।"

मौसी ने उसे गरम दूध दिया। वह सोच रहा था कि मौसी कितनी अच्छी हैं। उसने उनका नुकसान किया, तब भी उन्होंने उसे नहीं डाँटा, उल्टे उसकी सेवा कर रही हैं।

अगले दिन जब मौसी ने कहानी सुनानी शुरू की तो राजू भी आकर बैठ गया। मौसी ने आज कोई प्रश्न नहीं पूछा। वह कहानी सुनाने लगीं तो राजू बोला– "मौसी पहले प्रश्न तो पूछिए।"

मौसी ने राजू को प्रसन्न होकर देखा। उनको विश्वास हो गया था कि अब राजू सही राह पर आ गया है।

□ मो.नं.-9839022552

आया बसन्त

□ डॉ० रोहिताश्व अस्थाना

मीलों तक सरसों पियराई।
आया बसन्त, मधु ऋतु आई।।

बागों में कोयल बोल उठी,
है मन्द समीरण डोल उठी,
डालियाँ पुरातन पर्ण त्याग-
नव कोंपल-दल से मुस्काईं।

आमों में बौर नया आया,
सारे उपवन को महकाया,
पेड़ों, मुण्डेरों, खम्भों पर
गूँजी खगकुल की शहनाई।

जाड़े का मौसम बीत चला,
सूरज दादा ने उसे छला,
अब बन्द हुआ कुहरा-पाला,
गुनगुनी धूप है इतराई।।

हम सबने बासन्ती कुरता-
पाजामा पीला सिलवाया
बनकर बसन्त नाचे-कूदे
हमको यह ऋतु मन से भाई।

□ निकट-बावन चुंगी चौराहा,
हरदोई-241001 (उ.प्र.)
मो.नं.-7607983984

सुरजा भैंसे का अहम

□ दिनेश विजयवर्गीय

लविता वन अपनी विशालता और विभिन्न प्रकार के जीव जन्तुओं के लिये प्रसिद्ध था। इस वर्ष वहाँ इतनी वर्षा हुई कि वन के छोटे-मोटे ताल-तलैया सभी भर चुके थे। वन से गुजर रही, कालिना नदी भी अपने तेज जल प्रवाह से बह रही थी। रात के सुनसान में उसकी कलकल आवाज दूर-दूर तक सुनाई देती। वन के सारे जीव जन्तु खुशहाली महसूस कर रहे थे। इस बार उन्हें अपना पेट भरने के लिये दूर तक नहीं जाना पड़ेगा।

लविता वन में कई प्रजातियों के पशु-पक्षी निवास करते थे। जिनमें लोमड़ी, हिरण, बारहसिंगा, खरगोश, भेड़िये, जिराफ, बंदर, धारीदार गधे, अजगर, जंगली भैंसे, भालू, हाथी प्रमुख थे। वहाँ कई रंग-बिरंगे पंख वाले पक्षी भी बड़ी संख्या में थे, जो वन में उड़ने का आनन्द लिया करते थे।

वहाँ के भैंसे बहुत हृष्ट-पुष्ट व शक्तिशाली थे। वह सब साथ ही घास चरने के लिये जाते। उनके आपसी तालमेल के चलते वे मांसाहारी शिकारी जीवों से भी प्रायः सुरक्षित रहते। इन भैंसों के समूह में यों तो सभी शक्तिशाली थे। लेकिन सुरजा नाम का भैंसा समूह में सबसे अधिक ताकतवर था। उसने कई भैंसों को लड़ाई में हरा दिया था। अतः सभी ने उसके नेतृत्व को स्वीकार कर लिया था। वह अकेले ही शेर को सींगों से उछालकर फेंक देता। एक बार तो उसने एक शेर को इतना दूर उछाल दिया कि वह काँटेदार बबूल के पेड़ पर जा गिरा। तब से शेर उसका शिकार करने की कल्पना से भी डरते थे।

सुरजा कई बार अपने मजबूत गठीले शरीर के चलते अपने समूह से हटकर भी दूर-दूर घास चरने चला जाता। उसे दल के

बुजुर्ग अनुभवी भैंसे ने सलाह दी कि वह कभी वन में अपनों का साथ छोड़ अकेला न जाए। सबके साथ रहने में ही उसकी भलाई है। पर वह अपनी अटूट शारीरिक क्षमताओं के चलते, बुजुर्ग भैंसे की सलाह को नजरअंदाज करता रहता।

ऐसे ही एक दिन सुहावने मौसम में वह अपने दल से दूर जाकर घास चरने लगा। कई शेर भी उससे कुछ दूरी पर भोजन की तलाश में वन में घूम रहे थे। तभी उनकी निगाह उस हृष्ट-पुष्ट भैंसे सुरजा पर पड़ी। उसे देख उनके मुँह में पानी भर आया।

तभी एक युवा पीलू शेर उसका शिकार करने के लिये सुरजा के पास आ गया। वह गर्दन पकड़ उसे नीचे गिराने की सोचने लगा। पर सुरजा को भी अपने अनुभवों से काफी कुछ जानकारी प्राप्त थी। जैसे ही पीलू छलांग मारता उसके सामने आया तो उसने दौड़ कर अपने सीगों से उसे उछाल कर दूर फेंक दिया। पीलू के साथी उसके भय से भाग खड़े हुए।

सुरजा अपनी मस्ती में चरता हुआ कुछ और आगे चला गया। एक पेड़ के पास घास बहुत ऊँची हो रही थी। उसी को चरने वह वहाँ पहुँच गया। पेड़ से कुछ दूर पर शेरों का झुण्ड बैठा था। उनकी इच्छा थी कि यदि इसका शिकार कर लिया जाये तो सभी का पेट भर जायेगा।

शेरों ने दादा जोनम से सुरजा को मारने का उपाय बताने को कहा। जोनम ने कहा– "इस समय सुरजा पेड़ के पास की हरी भरी घास का आनन्द ले रहा है। तुम सब पेड़ के चारों ओर उसे घेर कर खड़े हो जाओ। उसे डराने का प्रयास करो। वह सीगों से मारने के लिये तुम्हारे पीछे भागेगा। लेकिन जब तुम सब बार-बार ऐसा करोगे तो वह घास भी नहीं खा पायेगा और थकने लगेगा। फिर वह अधिक देर तक दौड़ नहीं पाएगा।

तभी एक जना उसकी पीठ पर छलांग लगाकर उस पर प्रहार करना। तुरन्त दूसरा कोई उसकी गर्दन पकड़ लेना और दो जने उसकी पिछली टाँगें दाँतों से जकड़ लेना। आखिर वह सारे आक्रमण सह नहीं पायेगा और चिल्लाता हुआ नीचे गिर पड़ेगा।" शेरों ने वैसा ही किया। सचमुच जोनम की योजना सफल हुई। देखते ही देखते सुरजा नीचे गिर पड़ा।

सबने उसे चीर-फाड़ कर अपना भर पेट भोजन प्राप्त किया। सभी ने बूढ़े शेर जोनम की अनुभवी सोच की प्रशंसा की। सुरजा के समाज के भैंसों को इसका दुख हुआ कि उनके दल का एक दिलेर मजबूत साथी अपनी शक्ति के अहम का शिकार हो गया।

□ 215, मार्ग-4, रजत कॉलोनी, बून्दी-323001 (राज.), मो.नं.-9413128514

दो बिल्लियाँ

□ बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

गोपाल सुबह सो कर उठा तो उसके कानों में बिल्लियों की रोने की आवाज सुनाई पड़ी। वह घर से बाहर निकल आया। देखा सड़क पर दो नन्हीं बिल्लियाँ बैठी रो रही थीं। तभी मोहल्ले के कई बच्चे दोनों बिल्लियों को देखने आ गए। गोपाल के दोस्त ओम ने कहा– "गोपाल भैया, लगता है किसी ने अपने घर से निकाल कर इन बिल्लियों को सड़क पर छोड़ दिया है। शायद ये बहुत भूखी हैं। तुम ऐसा करो, इन बिल्लियों को उठा कर घर में ले जाओ और दूध पिला कर छोड़ देना।"

"मैं क्यों ले जाऊँ ? इतनी दया लगती है, तो तुम इसे अपने घर ले जाओ।"

"यार गोपाल, तुम तो बेकार में नाराज हो गए। तुम नहीं ले जाओगे तो मैं ही ले जा रहा हूँ। मैं इन्हें पालूँगा। जब बड़ी हो जाएँगी तो छोड़ दूँगा।" इतना कह कर ओम बिल्ली के दोनों बच्चों को उठा कर अपने घर की ओर चल दिया।

घर में पहुँचते ही ओम की मम्मी डाँटती हुई बोली– "अरे यह कहाँ से मुसीबत ले लाए ? जाओ, इन्हें जहाँ से लाए हो, वहीं छोड़ आओ। तभी घर में हलने दूँगी।"

"मम्मी, तुम क्यों नाराज हो रही हो। दोनों बच्चे बहुत भूखे हैं। पहले एक कटोरे में हमें दूध दो, ताकि इन्हें पिला सकूँ।"

"देखो इन्हें दूध पिला कर छोड़ आना।" इतना कह कर ओम की मम्मी ने एक कटोरा दूध लाकर सामने रख दिया। बिल्लियों ने दूध को गटर-गटर पीना शुरू कर दिया। देखते ही देखते कटोरा खाली हो गया। पेट भर जाने से बिल्लियों ने रोना बन्द कर दिया। तभी गोपाल वहाँ आकर बोला– "ओम तुम इन बिल्लियों को हमें दे दो। हमारी मम्मी ने कहा है, हम इन्हें पालेंगे।"

इतना सुनना था कि ओम बोल पड़ा– "गोपाल भाई, तुम दोनों बिल्लियों को खुशी-खुशी अपने घर ले जा सकते हो।"

गोपाल बिल्लियों को लेकर अपने घर चला आया और उन्हें पालने लगा। एक सप्ताह में दोनों बिल्लियाँ पहले से ज्यादा तंदुरुस्त हो गईं और घर से बाहर तक घूमने लगीं। बिल्लियों से मोहल्ले के बहुत सारे बच्चों को प्यार हो गया। वे उन्हें गोद में उठा कर खूब खेलाते थे। धीरे-धीरे एक महीना गुजर गया। बिल्लियों ने अब चूहों का शिकार भी करना शुरू कर दिया। फिर एक दिन अचानक रात में बिल्लियाँ घर से निकल कर पता नहीं कहाँ चली गईं। गोपाल और ओम ने उन्हें खूब ढूँढ़ा, मगर वे कहीं नजर नहीं आईं।

गोपाल अब उदास रहने लगा। उसकी मम्मी ने समझाते हुए कहा– "बेटा, तुम्हें उदास होने की कोई जरूरत नहीं। बिल्लियाँ चली गईं तो सर से बला टल गयी। वे जहाँ भी होंगी, आराम से होंगी।"

कुछ दिनों में गोपाल धीरे-धीरे सब कुछ भूल गया। फिर पन्द्रह दिन बाद अचानक दोनो बिल्लियाँ गोपाल के घर आ कर म्याउँ-म्याउँ बोलने लगी। आवाज सुन कर गोपाल घर से बाहर आ गया और उन्हें देख कर हैरान रह गया। वह बिल्लियों को गोद में उठा कर उन्हें पुचकारने लगा। बिल्लियाँ प्यार से गोपाल का हाथ चूमने लगीं। मानो कह रही हों, अब हम यहाँ से कहीं नहीं जाएँगे।

□ श्रोता क्लब, गल्लामण्डी, गोला बाजार, गोरखपुर-273408, **मो.नं.** : 9838911836

तितली

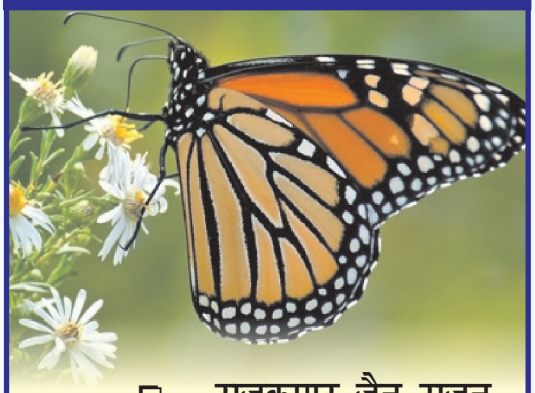

□ राजकुमार जैन राजन

फूलों पर मँडराती तितली
देख उन्हें बलखाती तितली।

खुशबू उनकी पाकर कैसे
मंद-मंद मुस्काती तितली।

रंग-बिरंगा जिस्म बनाकर
कैसे वो शरमाती तितली।

फर-फर-फर-फर पंख हिलाती
बच्चों को बहलाती तितली।

जब हम उसके पीछे भागें
सच में खुश हो जाती तितली।

उसके बिन है बाग अधूरा
वो दीपक तो बाती तितली।

मैं राजन बस देख रहा हूँ
फूलों को सहलाती तितली।

□ चित्रा प्रकाशन, आकोला, चित्तौड़गढ़-312205 (राज.)
मो.नं.-9828219919

ठण्ड का असर

□ डॉ० दिनेश पाठक 'शशि'

आज नहीं आए सूरज जी,
लगता, ठण्डी मान गए।
कोहरे की चादर को ओढ़े,
छुपकर, लम्बी तान गए।।

बुरा हुआ अब हाल ठण्ड से
सभी ठिठुर कर काँप रहे।
रहे किटकिटा दाँत सभी के
जैसे माला जाप रहे।।

नहीं छूटती गरम रजाई
पड़े रहो बस मन करता।
दादू की झिड़की सुन लेकिन
बच्चों का है मन डरता।।

बहुत हो चुका सूरज दादा
मत हमको अब तरसाओ।
ओढ़ रजाई बैठें कब तक
अब तो बाहर आ जाओ।।

□ 28, सारंग विहार, मथुरा-281006
मो.नं.-9870631805

सूरज दादा

□ सुमन पाठक

सूरज दादा सूरज दादा,
मुझको जरा बताना।
सर्दी के मौसम में ही क्यों,
करते रोज बहाना।

कभी लेट होते आने में,
कभी मारते छुट्टी।
जरा बताओ तुम्हें पढ़ाई,
किसने ऐसी पट्टी।

सर्दी के इस मौसम में मैं,
धूप सेंकना चाहूँ।
पर तुम तो गायब रहते हो
कैसे बाहर आऊँ।

सुबह-सुबह तो नहीं छूटती
कम्बल और रजाई।
मगर करूँ क्या मुझको,
करनी पड़ती रोज पढ़ाई।

सीधी-सच्ची बात हमारी,
मानो सूरज दादा।
सही समय पर नित आने का
कर दो मुझसे वादा।

□ श्रीकृष्ण जन्म स्थान, मथुरा।
मो.नं.-8755051752

सपनों की बारिश

□ डॉ० फहीम अहमद

हुई रात सपनों की
बारिश झमाझम।

पड़े हम रहे अपनी
पलकों को मूँदे।
टपकती रहीं नन्हें
ख्वाबों की बूँदें।

लगे चाँद से हम
चमकने चमाचम।

सजे रात आँखों में
सपने सुहाने
लगे इंद्रधनुषी
तराने सुनाने।

बजी मस्त ख्वाबों
की ढोलक ढमाढम।

लगीं झिलमिलाने
निराली तरंगें।
उड़ीं नभ में जैसे
हजारों पतंगें।

लगीं नाचने फिर
उमंगें छमाछम।

□ असिस्टेंट प्रोफेसर ,हिन्दी विभाग, महात्मा गाँधी मेमोरियल पी.जी. कालेज, सम्भल-244302 (उ.प्र.)
मो.नं.-8896340824

जाड़े में बरसात

□ चक्रधर शुक्ल

जाड़े में बरसात हुई
कितनी लम्बी रात हुई।

भोर हुई तो धुआँ-धुआँ,
गाँव का दिखता नहीं कुआँ।

सूरज ने गोला मारा,
जीरो तक आया पारा।

डी एम जी ने की छुट्टी,
दादा गरम करें मुट्ठी।

उछल कूद करते बच्चे,
उनको लगते दिन अच्छे।

□ एल.आई.जी.-1, सिंगल स्टोरी बर्रा-6, कानपुर-208027, मो.नं.-9455511337

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सन्ध्या तिवारी, निदेशक, इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, साक्षरता निकेतन, लखनऊ द्वारा इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, लखनऊ के लिए इण्डिया लिटरेसी बोर्ड की वेबसाइट- www.indialiteracyboard.org. पर ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित।
सम्पादक : लायक राम मानव